LIBRARY OF PRINCETON
MAR 1 1913
THEOLOGICAL SEMINARY

HINDI TRACTS.

4TH ED.—5000.] [WHOLE No. 25.000.

THE WORD OF GOD
CONCERNING IDOLATRY.

LIBRARY OF PRINCE
MAR 1 191
THEOLOGICAL SEMI

मूर्त्ति पूजा के बिषय में श्री परमेश्वर का मुख बचन।

यात्रा २० पर्ब्ब १-६ पद।

फिर ईश्वर ने ये सब बातें कहीं। कि तेरा परमेश्वर ईश्वर जो तुझे मिसर की भुमि से और बंधुआई के घर से निकाल लाया मैं हों। मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा ईश्वर न होगा। अपने लिये खोद के किसी की मुर्त्ति और किसी बस्तु की प्रतिमा जो ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में अथवा जल में जो पृथिवी के नीचे है मत बनाईयो। तु उनको प्रणाम मत कीजियो न उनकी सेवा कीजियो इसलिये कि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित ईश्वर हों पितरों के अपराध का दंड उनके पुत्रों को जो मेरा बैर रखते हैं उनकी तीसरी और चौथी पीढ़ी लों देवैया हों। और उनमें से सहस्रों पर जो मुझे प्रेम करते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हों।

बिवाद की पुस्तक ४ पर्ब्ब १४-१९ पद।

और परमेश्वर ने उस समय मुझे आज्ञा किई कि तुम्हें बिधि और बिचार सिखलाओं जिसतें तुम उस देश में जाके जिसके तुम अधिमारी होओगे उनपर चलो। सो तुम आप से बड़ुत चौकस

रहेा क्योंकि जिस दिन परमेश्वर ने होरेब में आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें कहीं तुमने किसी प्रकार का रूप न देखा। ऐसा न हेा कि तुम बिगड़ जाओ और अपने लिये खोदी ऊई मूर्त्ति किसी पुरुष अथवा स्त्री की प्रतिमा बनाओ। किसी पशु की प्रतिमा जो पृथिवी पर है अथवा किसी पंक्षी का रूप जो आकाश में उड़ते हैं। अथवा किसी जंतु का रूप जो भूमि पर रेंगते हैं अथवा किसी मछली का रूप जो पृथिवी के नीचे पानियों में हैं। ऐसा नहेा कि तुम स्वर्ग की ओर आंखें उठाओ और सूर्य्य और चंद्रमा और तारों को और आकाश की समस्त सेनाओ को देखो तब उन्हें पूजने को बगदाये जाओ और उनकी सेवा करो जिन्हें परमेश्वर ने स्वर्ग के तले समस्त जाति गणों के लिये बिभाग किया है।

बिवाद की पुस्तक १२ पर्व्व २८--३२ पद।

इन सब बातों को सोचो जो मैं तुम्हें आज्ञा करता हों सुनो जिसमें तेरा और तेरे पीछे तेरे बंश का सनातन लों भला होवे जब कि तुम वुह जो भला और ठीक है परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में करो। जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जाति गणों को तेरे आगे से काटडाले जहां तू जाता है कि अधिकारी बने और तू उनका अधिकारी होवे और उनके देश में बास करे। अपने से चौकस रहियो नहेा कि जब वे तेरे आगे से बिनाश होवें तू उनके पीछे बच जाय और नहेा कि तू उनकी देवतों को खोज करके कहे कि इन जाति गणों ने अपने देवतों की सेवा किस रीति से किई थी मैं भी वैसी करोंगा। तू परमेश्वर अपने ईश्वर से ऐसा मत कीजियो क्योंकि उन्होंने हर एक कार्य्य जिस्से ईश्वर को घिन है जिस्से वुह बैर रखता है अपने देवतों के लिये किया

यहां लों कि अपने बेटों और बेटीयों को अपनी देवतों के लिये आग में जखादिया। तुम हर एक बात को जो मैं तुम्हें कहता हों सोच के मानियो उसमें न बढ़ाईयो न उसमें घटाईयो।

१३५ गीत १५--१८ पद।

अन्यदेशीयों की मूर्त्ति सोना और रूपा और मनुष्यों की क्रिया हैं। वे मुंह रखती हैं पर बोलती, नहीं वे आखें रखती हैं पर देखती नहीं। वे कान रखती हैं पर सुनती नहीं वे तो मुंह से खांस भी नहीं लेतीं। जो उनके बनवैये हैं सो उन्हीं के समान हैं और हर एक जिसका भरोसा उन पर है सो ऐसा ही है।

आशिया १ पर्व्व २--८ पद।

हे आकाश सुनो और हे पृथिवी कान धर क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि मैं ने लड़कों को पालापोसा पर वे मुझ से फिर गये हैं। बैल अपने स्वामीको पहिचानता है और गदहा अपने प्रभु की झोंपड़ी को परंत इसराईल नहीं जानते मेरे लोग नहीं सोचते। हाय पापमय देशी पाप से लदी ऊई मंडली कुकर्मियों के बंश बिगाडू लड़के उन्होंने परमेश्वर को त्याया है और इसराईल के धर्ममय को खिजाया है वे मार्ग से उलटे फिरे। क्यों अधिक शासन किये जाओगे तुम अधिक फिरते जाओगे सारा सिर रोगी है और सारा मन दुर्बल। तलवा से लेके सिर ताईं उसमें कहीं आरोग्यता नहीं परंतु घाव और चोट और सड़े ऊए घाव हैं वे न दबायेगये न बांधेगये और किसी ने तेल मलके उन्हें कोमल न किया। तुम्हारा देश उजाड़ है तुम्हारी बस्तियां जलगईं परदेशी तुम्हारी भूमि को तुम्हारे आगे निंगलते हैं वुह उजाड़ है जैसा कि उसे परदेशियों ने नाश करदिया।

आशिया ४४ पर्व्व ८--२२ पद।

तुम मत डरो और भय मत खाओ क्या मैं ने आरंभ से उसे तुझ को न कहा हां मैं ने उसे आगे से तुझे दिखाया और तुम मेरे साक्षी हो क्या मुझे छोड़ कोई ईश्वर है हां कोई दूसरा ठीक रक्षक नहीं मैं दूसरा नहीं जानता। वे जो खोदीऊई मूर्त्ति बनाते हैं सो सबके सब वृथा हैं और उनके चित्रकार से कुछ लाभ न होगा हां उनके कार्य उनपर साक्षी देते हैं वे न देखते हैं न समुझते हैं कि हर एक लज्जित हो। कि उसने एक देव बनाया और खोदीऊई मूर्त्ति ढाली जिस्से लाभ नहीं। देख उसके संगी लज्जित होंगे और उनके कार्यकारी मनुष्य हैं वे सबके सब एकट्ठे होंगे और आप को आगे करेंगे वे डरजायेंगे और एकट्ठे लज्जित होवेंगे। लुहार लोहेका टुकड़ा काटता है और कोइलों में उसे कमाता है और हथोड़ियों से उसका डौल करता है और अपनी भुजा के बल से उसे गढ़ता है हां वुह भूखा है और उसका बल घटता है वुह पानी नहीं पीता और मूर्छित है। बढई उस पर सूत खींचता है और लाल मट्टी से लकीर करके डोल खींचता है और रंदे से चिकना करता है और परकार से उस पर रूप खींचता है और मनुष्य के सुडौल रूप के तुल्य बनाता है जिसतें वुह घर में रहे। वुह अपने कार्य के लिये आरज वृक्ष को काटता है और देवदारु और आलोम वृक्ष को लेता है और बनके वृक्षों में से अच्छी ढेर लगाता है वुह आस वृक्ष लगाता है और बरखा उसका पालन करता है। जिसतें वुह मनुष्य के इंधन के काम के लिये होवे क्योंकि वुह उसे लेता है और आप को तापता है हां वुह उसे भट्ठी को तप्त करता है और रोटी पकाता है वुह उसे देव भी बनाता है और उसे दंडवत करता है वुह उसे खोदी ऊई

मूर्त्ति बनाता है और उसके आगे झुकता है। उसका कुछ लेके आग में जलाता है और उस में से कुछ लेके मांस पकाता है और खाता है वुह मांस भूनता है और उसकी भूख मिटजाती है वुह आप को तापता भी है और कहता है कि वाह मैं तात ऊआ मैं आग से सुखी ऊआ। और उसकी बची ऊई से एक देव अर्थात अपनी खोदीऊई मूर्त्ति बनाता है और उसके आगे दंडवत करता है और उसकी पूजा करता है और उसकी प्रार्थना करके कहता है कि मुझे बचाले क्योंकि तू मेरा देव है। वे नहीं जानते और नहीं समुझते क्योंकि उनकी आंखें मूंदीगईं कि वे देख नहीं सक्ते और उनके मन कि वे समुझ नहीं सक्ते। और कोई अपने मन में नहीं सोचता और न किसी में ज्ञान और समझ है कि कहे कि मैं ने तो उसका कुछ आग में जलाया और मैं ने उसके कोईलों पर रोटी भी पकाई और मैं ने मांस भूना और खाया और क्या मैं बचेऊए से घिनित बनाओं क्या मैं पेड़ की खूथी के आगे दंडवत करों। वुह राख खाता है छलित मन में उसको ऐसा बहका दिया कि वुह अपना प्राण बचा नहीं सक्ता न कहिसक्ता कि क्या मेरे दहिने हाथ में झूठ नहीं। हे याकूब और इसराईल इन बातों को स्मरण कर क्योंकि तू मेरा दास है मैं ने तूझे बनाया है तू मेरा सेवक है हे इसराईल मुझ से तू बिसराया न जायगा।

आशिया ४६ पर्व्व २--१३ पद।

हे याकूब के घराने और हे इसराईल के घर के सारे बचेऊए लोगो जिन्हें जन्मतें मैं लिये फिरा और जो गर्भ से उठाये गये मेरी सुनो। मैं तुम्हारे बुढ़ापे लों एकसा हों और पके बाल लों मैं तुम्हें लिये फिरोंगा मैं ने बनाया और मैं उठाऊंगा और मैं ले जाऊंगा और मैंहीं बचाऊंगा। तुम मुझ को किस से उपमा देोगे

ओर मुझे किसके तुल्य करोगे ओर मुझे किस्से मिलाओगे जिसतें हम समान होवे। तुम जो थैली से सेाना उठाते हो ओर जो रूपे को तखड़े में तोलते हो वे सुनार को बनी में लाते है ओर वे उसके आगे दंडवत करते हैं। वे उसे कांधे पर उठालेते हैं वे उसे लिये फिरते हैं ओर उसे अपने सथान पर उतार देते हैं ओर वुह खड़ा रहता है वुह अपने सथान से निकाल न जायगा जो उसे पुकारता हे वुह उसको उत्तर नहीं देसक्ता न वुह उसके दुख से उसे छुड़ावेगा। इसे चेत करेा ओर आप को मनुष्य दिखाओ हे फिरेऊओ ध्यान से इसे सेाचेा। प्राचीन पनय की अगिली बातें को स्मरण करो निश्चय मैं ईश्वर हेां ओर कोई नहीं मैं ईश्वर हेां ओर मेरे तुल्य कोई नहीं है। आरंभ से अंत्य लों ओर अगिले समयें से जो अब लों पूरी नहीं ऊईं बताताहूं ओर कहताहूं मेरा मंत्र स्थिर होगा ओर मैं अपनी समस्त इच्छा को पूरा करोंगा। मैं एक गिद्ध को पूर्ब से ओर अपने मंत्र के पुरुष को दूरदेश से बुलाता हेां जैसा मैं ने कहा है वैसा मैं पूरा करोंगा मैं ने ठहराया है ओर उसे करडालेांगा। हे कठोर अंतःकरणेा तुम जो बचाव से दूर हो मेरी सुनेा। मैं अपनी बाचा के परित्राण को सपीप लाता हेा वुह दूर न होगा ओर मेरी मुक्ति बिलम्ब न करेगी ओर मैं सेह्यन में अपनी मुक्ति देऊंगा ओर इसराईल को अपना बिभव देऊंगा।

इरमियाः १० पर्ब्ब १--८ पद।

जो बचन परमेश्वर ने कहा है उसे सुनेा हे इसराईल के बराने परमेश्वर ने तुम्हीं से यें कहा है। अन्यदेशीयें की चाल पर मत चलेा ओर स्वर्ग के चिन्हेां से बिस्मित मत होओ यद्यपि अन्यदेशी उनसे बिस्मित होवें। क्योंकि लेागें के ठहराये ऊए कार्य ब्यर्थ-

ही हैं इसलिये वे बन में से पेड़ काटत हैं यह उसी के कार्यकारी का है जो चोखे हथियार से कार्य करता है। वे सोने चांदी से विभूषित करते हैं और कील और हथौड़ी से उन्हें दृढ़ करते। जिसतें वे न डगमगावें। वे खजूर पेड़ की नाईं पोढ़ हैं परंतु बोल नहीं सक्ते उन्हें सर्वथा लेजाने पड़ेगा क्योंकि वे चल नहीं सक्ते उन्हें मत डरो क्योंकि वे दुख नहीं दे सक्ते और भलाई करने में वे आसक्त हैं। हे परमेश्वर तेरे तुल्य कोई नहीं तू महान है और पराक्रम में तेरा नाम भी बड़ा है। हे जातिगणों के राजा तेरे आगे आने में तुझे कौन न डरेगा जैसा कि जातिगणों में के सारे बुद्धिमानों में और उनके सारे राज्यों में तेरे तुल्य कोई नहीं। परंतु जब वे आगे आते हैं तो महे और मूढ़ हैं और काष्ट लों वृथा के दपटवैये हैं।

११५ गीत।

हे परमेश्वर हमारे लिये नहीं हमारे लिये नहीं परंतु अपनी दयाके लिये और अपनी सचाई के लिये तेरे ही नाम की प्रतिष्ठा होवे। अन्यदेशी क्यों कहें कि उनका ईश्वर काहां है? परंतु हमारा ईश्वर तो स्वर्ग पर है जो कुछ उसने चाहा सो किया है। उनकी मूर्त्ति मनुष्यों के हाथ की बनाई ऊई सोना चांदी हैं। वे मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं वे आंखें रखती हैं पर देखती नहीं। वे कान राखती हैं पर सुनती नहीं उनकी नाक हैं परंतु सूंघती नहीं। वे हाथ रखती हैं पर छूती नहीं वे पांव रखती हैं पर चलती नहीं वे अपने गले से बोल नहीं सक्तीं। उनके बनवैये और वे सब जो उनका भरोसा रखते हैं उन्हीं की नाईं हैं। हे इसराईल परमेश्वर पर भरोसा रख वही उनका सहायक और उनकी ढाल है। हे हारून के घराने परमेश्वर पर भरोसा रख

कि वही उनका सहायक और ढाल है। तुम जो परमेश्वर से डरते हो परमेश्वर पर भरोसा रखो वही उनका सहायक और ढाल है। परमेश्वर ने हमें स्मरण किया है वही आशीष देगा वह इसराईल के घराने पर आशीष देगा वह हारून के घराने को आशीष देगा। वह उनको जो परमेश्वर से डरते हैं छोटों बड़ों सहित आशीष देगा। परमेश्वर तुम को और तुम्हारे लड़कों को बढ़ाता जायगा। तुम आकाश और पृथिवी के सृष्टि कर्त्ता परमेश्वर के आशीषित होओ। स्वर्ग अर्थात् स्वर्गगण परमेश्वर के हैं परंतु उसने पृथिवी मनुष्य के वंश को दिई है। मृतक परमेश्वर की स्तुति नहीं करते और न वे सब जो समाधि में उतरते हैं परंतु हम इस समय से लेके सदा लों परमेश्वर की स्तुति किया करेंगे परमेश्वर का धन्यवाद करो।

इरमियाः २ पर्व्व २६--२९ पद।

जैसा पकड़े जाने में चोर लज्जित है तैसा इसराईल का घराना वे और उनके राजा और उनके राज पुत्र और उनके याजक और उनके भविष्यद्वक्ता लजाये गये हैं। जो एक टुकड़े लकड़ी से कहते हैं कि तू मेरा पिता और पत्थर को कि तू ने मुझे जना है निश्चय उन्होंने मेरी ओर पीठ फेरी पर मुंह नहीं परंतु अपने दुख के समय में कहेंगे कि उठके हमारी रक्षा कर। परंतु तेरे देव कहां हैं जिन्हें तू ने अपने लिये बनाया है वे उठें यदि तेरे दुख के समय तेरी रक्षा करसकें क्योंकि हे यहूदा तेरे नगरों की गिनती के समान तेरे देव हुए हैं। तुम लोग किस बात के लिये मुझसे बिवाद करोगे परमेश्वर कहता है कि तुम सब के सब मेरे बिरुद्ध फिरगये हो।

इर्मियाः १० पर्व्व १०--१६ पद।

परंतु परमेश्वर सत्य ईश्वर जीता ईश्वर श्रीर सनातन का राजा उसके कोप से पृथिवी थरथरावेगी श्रीर जातिगण उसके जलजलाहट को नहीं सहि सकेंगे। उन्हें इस रीति से कहो कि जिन देवों ने स्वर्ग श्रीर पृथिवी को नहीं बनाया पृथिवी पर से श्रीर स्वर्ग के तले से नष्ट होंगे। उसने अपनी सामर्थ्य से पृथिवी को सिरजा है श्रीर अपनी बुद्धि से जगत को स्थिर किया श्रीर अपनी समझ से भी स्वर्गों को फैलाया है। जब वुह अपने शब्द को बढ़ाता है तब जल का कोलाहल आकाश में होता है श्रीर पृथिवी के सिवाने से मेघों को उठाता है श्रीर वुह मेंह के साथ बिजुली निकालता है श्रीर अपने भंडारों से बायु निकालता है। हर एक मनुष्य मान लेने से पशु होता है हर एक सोनार खोदने से लजा जाता है जब उन्होंने पूजने के लिये झूठी झूठी बस्तुं खड़ी किई है श्रीर ऐसी जिनमें कुछ स्वांस नहीं। वे व्यर्थ हैं उनके कार्य्य जो बहुत चूक करते हैं अपनें पलटा के समय में वे नाश होंगे।

आशियाः २ पर्व्व ८--२२ पद।

श्रीर उनकी भुमि मूर्त्तिन से भरपूर है वे अपने हाथों के कार्य्यों को श्रीर अपनी अंगुलियों के कृत्य को पूजते हैं। श्रीर तुच्छ मनुष्य झुकता है श्रीर महान दीन होता है इस लिये तू उन पर क्षमा न करेगा। परमेश्वर के भय के मारे श्रीर उसकी महिमा के बिभव के कारण पहाड़ में पैठ श्रीर धूल में छिप। मनुष्य की ऊंची दृष्टि उतारी जायेंगी श्रीर मनुष्य का अहंकार झुकायाजायगा श्रीर उस दिन केवल परमेश्वर की महिमा होगी। क्योंकि परमेश्वर सेनाश्रों के ईश्वर का दिन हर एक अहंकारी श्रीर अभिमानी श्रीर हर एक उभड़े हुए पर होगा श्रीर वुह उतारा जाय-

गा। और लबनान के सारे ऊंचे और ऊभरे हुए अरज वृक्षों के और बासान के सारे बलूत वृक्षों के। और सारे ऊंचे पहाड़ों के और सारी उभरी हुई पहाड़ियों के। और हर एक ऊंचे गुमट के और हर एक दृढ़ गढ़ के। और तरशीश के सारे जहाजों के और सारे सुन्दर चित्रों पर होगा। और मनुष्य का अहंकार झुकाया जायगा और लोगों का अभिमान उतारा जायगा और उस दिन केवल परमेश्वर की महिमा होगी। और मूरतें सर्वथा जाती रहेंगी। वे परमेश्वर के भय से और जसके विभव की महिमा से जब वुह भयानक रीति से पृथिवी को झरझराने को उठेगा तब वे पहाड़ों की कंदला में और भूमि के गड़हों में पैठेंगे उस दिन मनुष्य अपने रूपे की मूरतों और सोने की मूरतों को जो उन्होंने अपनी पूजा के लिये बनाई हैं छछूंदरों और चमगुदड़ों के आगे फेंकदेंगे। परमेश्वर के भय के और उसके विभव की महिमा के मारे जब वुह भूमि को भयंकर रीति से झरझराने को उठेगा तब वे चटानों के दरारों के खड़बिड़ में और चटानों की चोटियों में घुस जायेंगे मनुष्य का भरोसा न करो जिसका खास उसके नथुनों में है क्योंकि वुह किस लेखे में है।

इससे जाना जाता है कि सब के सब जो कोई किसी मूर्त्ति को पूजा करता है ईश्वर के आगे पातकी है और परमेश्वर के खाप के तले पड़ा है इस लिये श्री परमेश्वर का मुख बचन फेर कहता है कि वुह जन खापित है जो व्यवस्था के सारे बचन को पालन नहीं करता।

४६ गीत ६--१० पद।

वे जो अपने धन पर भरोसा करते हैं और अपनी संपत्ति की बड़ाई पर फूलते हैं। उनमें से कोई किसी भांति से अपने भाई

को छुड़ा नहीं सक्ता न उसके कारण ईश्वर को प्रायश्चित्त दे सक्ता। क्योंकि उनके प्राणों का प्रायश्चित बड़मूल्य है और सर्वदा असाध्य है। जिसतें वुह सर्वदा जीता रहे और नाश न देखे। क्योंकि वुह बुद्धिमान को मरते देखता है और मूढ़ और पशुवत प्राणी भी नष्ट होते हैं और अपनी संपत्ति औरों के लिये छोड़ जाते हैं।

श्री परमेश्वर फेर कहता है कि बिना लोहू बहाये मोच नहीं होता और कि अनहोना है कि बैलों और बकरियों का लोहू पापों को मिटावे परंतु उसके पुत्र ईसामसीह का लोहू हमको समस्त पापों से पवित्र करता है क्योंकि वुह पाप को नाश करने के लिये अपने को बलिदान देके एकही बार प्रगट हुआ है। और जैसा कि ठहराया गया कि मनुष्य एक बार मरे और उसके पिछे बिचार। वैसाही मसीह एक बार बहुतेरों के पापों को उठावने के लिये चढ़ाया गया और उनके उद्धार के लिमे जो उसके दूसरे बार आवने की बाट जोहते हैं निष्पाप प्रगट होगा और किसी दूसरे में मुक्ति नहीं क्योंकि स्वर्ग के तले कोई दूसरा नाम मनुष्यों को नहीं दिया गया है जिससे हमलोग उद्धार पा सकें सो देखो ईश्वर का मेम्ना जो जगत के पाप को ले जाता है। क्योंकि अति दयासागर परमेश्वर ने सारे जगत के पापियों को बचाने के लिये अपने पुत्रा ईसामसीह को जगत में भेजा जिसतें सब के पाप के लिये प्राश्चित्त होवे और सब के सब उस पर बिश्वास लाके मुक्ति पावें इसी लिये श्री मुख बचन में फेर लिखा है कि प्रभु ईसा मसीह हमारे पाप के लिये स्रपित हुआ जिसतें हम लोगों को परमेश्वर के आगे धर्मी ठहरावे सो हे प्रिय परमेश्वर के स्राप से भागो उसके महा कोप से भागो और उसीकी दया और उसके धर्म को ग्रहण करो उसके पुत्र ईसा मसीह पर बिश्वास लाके मुक्ति की

आशा रखो प्रभु ईसा मसीह के प्रायश्चित्त को अपने पाप का प्रायश्चित्त समझो और उसकी आज्ञा से दयाल ईश्वर की प्रार्थना करो और धर्म के मार्ग पर चलने को ईश्वर से नित सहाय मांगो और तुम धर्मात्मा की सहाय पाओगे तब तुम आनन्दता से उसकी आज्ञाओं को पालन करसकोगे और जब मृत्यु आवेगी तब तुम जय जय करके बैकुंठ को जाओगे परंतु इस बात को भूलो मत कि तुम्हारी मुक्ति प्रभु ईसा मसीह के विश्वास से है।

फिर परमेश्वर यों कहता है कि पश्चाताप करके अपनी मूर्त्तिन से फिरो और अपने सारे घिनितों से अपने अपने मुंह फेरो। उन्हें कह कि परमेश्वर ईश्वर यों कहता है कि अपने जीवन से दुष्ट की मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं परंतु जिसतें दुष्ट अपनी चाल से फिरे और जीये फिरो अपने कुमार्गों से फिरो तुम लोग किस लिये मरोगे।

PRESBYTERIAN MISSION PRESS, ALLAHABAD.

AN

EPITOME

OF

CHRISTIANITY.

ईश्वरीय मत का संक्षेप ॥

First Allahabad Edition.

ALLAHABAD:

PRINTED AT THE MISSION PRESS, FOR THE AMERICAN TRACT SOCIETY.

1843.

जगत में मनुष्यों ने अनेक मत रोपा है।

चौपाई।

जाके मन जस भावना आई।
सो तैसा बर्णन करि गाई॥

परंतु इतने मत के होने में यही निश्चय होता है कि जगत में ईश्वरीय एक सच्चा मत भी है क्योंकि सच्चे की देखा देखी लोग अपने स्वारथ के लिये झूठा भी खड़ा करते हैं जैसा लोग टकसाली रुपये को देख देख घर घर खोटा बनालेते हैं और श्रीमुख बचन में लिखा भी है कि परमेश्वर ने अगिले समय में अपने भविष्यद्वक्ता के द्वारा से मनुष्यों पर अपना भेद नाना रीति से प्रगट किया है परंतु अन्त में उसने अपने पुत्र कृपानिधान मुक्तिदायक ईसा मसीह की ओर से कहा उसी का बर्णन इस पोथी में संक्षेप से किया जाता है जिसतें इसे पढ पढ के और सुन सुन के मनुष्यों को ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होवे और उसे कल्याण और मुक्ति पावें।

आन आन मत में मनुष्यों ने अपनी अपनी बुद्धि दौड़ा के संसारिक बिद्या के बल से एक एक पंथ खड़ा किया है परंतु मंगल समाचार में और भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में मनुष्य की चतुराई और जगत की बिद्या से प्रयोजन नहीं रखता इस कारण कि ईश्वर के भक्तों ने ईश्वरीय प्रेरणा से इस ज्ञान को प्रगट किया है इसी लिये इस में कुछ भूल चूक की, अथवा खोटी बात नहीं है और न हो सक्ती है सो इसे ईश्वरीय ज्ञान समझ के पढ़ना सुना उचित है और यद्यपि ईश्वरीय बचन अनेक पुस्तकों में बहुत से भक्तों के द्वारा से लिखे गये और सहस्रों बरस के समाचार उनमें हैं तथापि सभों ने एकही पवित्रआत्मा की प्रेरणा से लिखा इस कारण उन सभों का एकही तत्व और एकही मत ठहरता है।

ON GOD.

१ पहिली कथा।

ईश्वर के बिषय में।

दोहा।

बर्णन तत्व स्वभाव का ईश्वर के यह जान।
अरु जो गुण हैं ईश्वके ताकों सुनि चितठान॥

चौपाई।

परब्रह्म का वर्णन जोई।
हिय में धरो कहों मैं सोई॥
ईश्वर को परमात्मा जान।
निराधीन नित्यानन्द मान॥
वुह असीम, अनादि, अनन्ता।
अरु है नित्य सदा भगवन्ता॥
सर्व दर्शी अरु सर्वव्यापी।
वुह अनन्त ज्ञानी भो आपी॥
वही सर्व सामर्थी ईश्वर।
अरु अनन्त बल है परमेश्वर॥
वुह तो शुद्धता में है जैसा।
ज्योतिमान तेजस्वी तैसा॥
सच्चा अरु विश्वासक वुह है।
और बचन में सदा अटल है॥
रहे अनीति बातें अलगानी।
नीति पूर्ण वुह कहों बखानी॥
अलख अखोज स्वयंभू जानो।
अद्वैत सत्य अरु जीवत मानो॥
परब्रह्म परमेश्वर स्वामी।
है घट घट का अन्तर जामी॥
यद्यपि ईश तत्व अद्वैत है।

ईश्वरत्व में तद्पि तीन हैं॥
धर्म्म ग्रंथ में जिनके नामा।
बर्णन कीन्ह करो सन्माना॥
नाम एक का पिता कहावे।
दूजा नाम पुत्र असगावे॥
अथवा शब्द जान निजहीय।
धर्म्मात्मा है नाम तृतीय॥
ये तीनों हैं ईश्वर एक।
समुझ बूझ हिय लाय बिवेक॥

ON GOOD ANGELS.

२ दूसरी कथा।
आत्मिक दूतों के बिषय में।

आत्मिक दूत शरीर रहित हैं और वे बहुत और अगणित हैं पवित्र होके, वे परमेश्वर की आज्ञा में लवलीन रहते हैं और मुक्ति के भागियों की सेवा और उनकी रखवाली करते हैं, अगिले समय में परमेश्वर उन्हीं की ओर से अपने भक्तों के पास संदेश भेजा करता था, उन्हों ने प्रभु ईसा मसीह का अवतार लेने का समाचार मनुष्यों के पास पहुंचाया, और जब हिरुदीस राजा

ने उस बालक का बैर करके उसे घात करने चाहा तब दूतों ने चिता के उसे बचवाया, और जब मुक्तिदाता ईसा मसीह ने चालीस रात दिन उपवास किया अंत में दूतों ने आके उसकी सेवा किई, और जब कोई पापी अपने अपराध से पश्चात्ताप करता है और मुक्तिदाता ईसा मसीह का शरण लेके धर्म मार्ग पर चलता है तब दूत लोग भी यहीं समझ के, बड़े आनन्दित होते हैं कि एक पापी पाप से उभाड़ा गया, और नरक बासी हमारे संग स्वर्ग निबासी हुआ इसी लिये जब प्रभु ईसा मसीह के भक्त शरीर को छोड़ते हैं तब वेही दूत उनके प्राणको ईश्वर के राज्य में पहुंचाते हैं, और ईश्वर उनके द्वारा से दुष्टों को दंड भी दिया करता है और श्री मुख बचन में भी लिखा है कि "परमेश्वर के एक दूत ने बैरी की सेना में रात भर में एक लाख अस्सी सहस्र मनुष्यों को घात किया" फेर एक स्थल में लिखा है कि दूतों ने स्वर्ग पर से आग और गंधक बरसा के पाप के मारे कई नगरों को भस्म किया, इससे जाना जाता है कि उनमें बड़ा बड़ा पराक्रम है और वे आप परमेश्वर के आगे नम्रता और दीनताई से नित्य धन्यबाद करते हैं—और जब धर्मी मरते हैं तब न्याय के दिन लों वे दूतों के समान शरीर रहित स्वर्ग में रहते हैं, और मंगल समाचार में लिखा है कि जब प्रभु ईसा मसीह मृतकों में से उठके

अपने राज्य को उठ गया तब दूत भी प्रभु के साथ साथ थे, और जगत के अंत में जब स्वयं ईश्वर का पुत्र ईसा मसीह मनुष्यों के विचार के लिये उतरेगा तब पवित्र दूतगण भी प्रभु के साथ आवेंगे और उसकी आज्ञा पाके जगत की चारों ओर से लोगों को उसके सिंहासन के आगे अकट्ठा करेंगे, यदि हम लोग ईसा मसीह के भक्तों में पाये जायेंगे तो दूतगण हमारे मित्र और सहायक होंगे नहीं तो हरप्रकार से दुष्टों के संग कष्ट में भागी होंगे।

ON EVIL SPIRITS.

३ तीसरी कथा।

पापात्मा के विषय में।

पापात्मा अर्थात् भूतों में शैतान प्रधान है, आगे सब के सब शुद्धात्मा थे परंतु ईश्वर के विरुद्ध होके भ्रष्ट हुए इस कारण परमेश्वर ने उन्हें स्वर्ग के सुख स्थान से कष्ट लोक में डाल दिया तब से वे नित्य पीड़ित रहते हैं, और पाप मय होके उनका स्वभाव ईश्वर के स्वभाव से विरुद्ध हो रहा है, इस लिये वे ईश्वर की विरुद्धता में नित्य रहते हैं, और जब परमेश्वर ने इस जगत को सिर्जा और मनु-

ष्य को अपने तुल्य धर्म्मी और पवित्र बनाया तब उस दुष्ट आत्मा ने अर्थात् शैतान ने जाके उन्हें बहकाया और उन से ईश्वर की आज्ञा उलंघन कराके मनुष्य को अपने समान पापी किया, और दुष्ट आत्मा तब से पाप के कारण जगत में राज्य करते हैं और पापी लोग उन्हीं का स्वभाव रखके आनन्द से उनके बश में रहते हैं इसी लिये शैतान इस जगत का राजा भी कहावता है, क्योंकि संसार उसी के बश में रहते हैं, और वुह अंधकार का भी राजा कहावता है क्योंकि पाप का और नरक का राज्य अंधकार है और पाप कर्म्म अंधकार कर्म्म कहावता है, और नरक के अंधकार बुद्धि से पाप कर्म्म होता है और शैतान नाशक और बैरी और दोषदायक, और बधिक और आरंभ का पापी भी कहावता है क्योंकि उसने अपने को नष्ट किया और औरों को भी नष्ट करता है, और अपना बैरी और जगत का बैरी है और पाप में वही उभाड़ता है और फेर मनुष्य पर दोष भी लगाता है, पाप करके आपको घात किया और पाप कराके पापियों के प्राण का घात करता है, और वुह छली भी कहावता है क्योंकि जगत को छल देता है, और वुह झूठा और झूठे का बाप भी कहावता है, क्योंकि वही झूठ बोलवाता है, और वुह गर्जनेवाला सिंह भी कहावता है, क्योंकि सिंह की नाई वुह लोगों को अहेर करने को इधर उधर

फिरा करता है, और वुह जगत का ईश्वर भी कहावता है, क्योंकि सारे जगत के पापी लोग उसी की पूजा करते हैं, और वुह पीड़ादायक और अथाह गड्ढे का राजा भी कहावता है, क्योंकि पाप कराके पीड़ा का कारण वही है और नरक के कष्ट स्थान का प्रधान वही है, और जहां लों ईश्वरीय धर्म से विरुद्ध बातें जगत में हैं तहां लों सब उसी दुष्ट आत्मा की प्रेरणा से हैं और यद्यपि लोग ईश्वर ईश्वर कहिके नाम लेते हैं और भजते हैं तथापि जहां लों मन्मता है तहां लों उसी शैतान का छल दिया हुआ है, और वुह अपनी पूजा और बलि आदिक ईश्वर के नाम से कराता है, और संसार में कितनी मता हैं जहां पापात्मा का नाम और चर्चा नहीं है ऐसी मता के लोग परमेश्वर को पाप और पुन्य का कर्त्ता ठहराते हैं सो ऐसी बातों से निश्चय जाना जाता है कि उसी शैतान ने उन्हें छल दिया है और वही आड़ में होके अपनी ही पूजा और सेवा कराता है और ऐसे लोग मरने के पीछे अपना भाग उसी के साथ कष्ट में पाते हैं वे भी बड़े बड़े पराक्रमी हैं और यदि उनका बश होता तो पल मात्र में सारे जगत के पापियों को नाश करके नरक का भागी कराते परंतु धन्य परमेश्वर को क्योंकि उसी ने उन्हें रोक रक्खा है और मनुष्यों की रक्षा आप करता है।

ON THE CREATION.

४ चौथी कथा।

सृष्टि के विषय में।

चौपाई।

आदि समय में ब्रह्म अपारा।
एथी स्वर्ग को कीन्ह पसारा॥
पुनि प्रभु तुरतहि जोति बनाई।
अंधकार तें तेहि अलगाई॥
तब प्रकाश को दिन प्रभु कहेउ।
तम का नाम राति अस भएऊ॥
संध्या प्रात काल तब भएऊ।
यहि बिधि प्रथम दिवस होइ गएउ॥
दूजे दिन प्रभु गगन बनाया।
करि दुइ भाग नभहि बिलगाया॥
तीजे दिन प्रभु आज्ञा दियेऊ।
जल एकत्र होइ सिंधु कहायेऊ॥
शुष्क भूमि जलतें अलगानी।
नाम तासु तब एथी बखानी॥
पर ब्रह्म की आज्ञा पाई।
भांति भांति तिन तृण उपजाई॥
बात कहत प्रभु चौथे दिन में।
दूई जोति रचि राखा नभ में॥

दिवसाध्यक्ष सूर्य करि राखा ।
चंद्र प्रधान राति को भाखा ॥
दिवस मास रितु वर्ष को ज्ञाना ।
होय जिन्हहितें करि परमाना ॥
पंचम दिन की सृष्टि यही भांती ।
कीट पतंग मच्छ बहु जाती ॥
प्रभु आज्ञातें इन को भाई ।
जलने बिलग बिलग उपजाई ॥
छठवें दिन प्रभु भूमिहि कहेऊ ।
पशु अनेक बातें उपजायेऊ ॥
सृष्टि अंत में मानुष रचेऊ ।
जेहि प्रकारतें सो अब भयेऊ ॥
प्रभु पृथिवी की धूलिहि लीन्हा ।
पुतला मानुष का तब कीन्हा ॥
जीवन श्वास फूंकेउ नथुनेतें ।
जीवत प्राण भयेउ सो तबतें ॥
सकल जगत प्रभुता तेहि दियेऊ ।
पृथ्वी प्रधान ताहि को कियेऊ ॥
पुनि तेहितें पसुली एक लीन्ही ।
उपकारिणी नारि रचि दीन्ही ॥
यहि बिधितें पति पत्नी भयेऊ ।
करि संबंध ईश अस कहेऊ ॥

अलग मातु पितु से नर रहई।
पति पत्नी के संगही बसई॥
कहेँउ बिचार जगत की रचना।
जेहि बिधि धर्म ग्रंथ के बचना॥
भये सकल जब पूरण कामा।
सतवें दिवस किये। बिश्रामा॥
यहि कारण सब देश में भाई।
सात दिवस व्यवहार से। होई॥

ON THE FALL OF MAN.

५ पांचवीं कथा।

मनुष्य की भ्रष्टता के बिषय में।

दोहा।

ईश क्रिया बर्णन किये। पृथक पृथक समुझाय।
अब मानुष के भ्रष्ट बिधि कहें। सुनहु चितलाय॥

चैापाई।

जब ईश्वर मानुष को रचेउ।
निज सम शुद्ध अरु पावन कियउ॥
तहां बारी एक सुभग लगाई।
आदि पुरुष को वहां बसाई॥

अरु नारी को प्रभु रचि दीन्हा।
उन्हें यही आज्ञा तब कीन्हा॥
सकल वृक्ष का फल तुम खायेऊ।
एक बिटप से कबहूं न खायेऊ॥
जो वह बीरुध का फल खैहो।
कहों तुम्हें निश्चय मरि जैहो॥
पर शैतान तहां तब आवा।
सर्प रूप धरि के बहकावा॥
अरु नारी से कहेसि बनाई।
अंतर कपट बचन मृदुताई॥
जो यह बीरुध का फल खैहो।
प्रण करि कहों नहीं तुम मरिहो॥
किंतु ज्ञान में भजे बुरेके।
नेत्र उघरि जै हैं तब नीके॥
होई हो निश्चय ईश समाना।
सुनि त्रिय तासु बचन को माना॥
ईश बचन को मिथ्या जाना।
बैरी बचन सत्य करि माना॥
आप खाय निजपति को दियेउ।
यहि बिधि पाप जगत में पैठेउ॥
बश में हो बैरी के दोऊ।
आदि पुरुष अरु नारी सोऊ॥

जिबहा स्वाद सुखद करि जाना।
अरु महिमा लगि ईश समाना॥
अपने को अरु निज बंशन को।
भ्रष्ट कीन्ह अरु मृतक सभन को॥
आदि पुरुष को ओर से भाई।
पाप जगत में है दुखदाई॥
पाप के कारण मृत्यु निवासा।
जेही तें होय सभन को नासा॥
वृद्ध तरुण बालक नर नारी।
अघमय सकल नरक अधिकारी॥

दोहा।

जग में पाप प्रवेश बिधि मानुष भ्रष्ट विधान।
कहि समुझायेउं देइ के धर्म ग्रंथ पर मान॥

ON THE LAW.

६ छठवीं कथा।
ईश्वरीय आज्ञा के विषय में।

ईश्वर ने मनुष्य को दो प्रकार की आज्ञा दिई है एक तो अपने विषय की दूसरी आपुस के विषय की।

दस आज्ञा का संक्षेप।

१ मुझे छोड़ दूसरे को ईश्वर मत मान।

२ किसी भांति की मूर्त्ति पूजा न कर।

३ ईश्वर का नाम अकारथ मत ले।

४ बिश्राम दिन को पवित्र जान के केवल ईश्वर के ध्यान और सेवा और धर्म्म कार्य में रह।

५ अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे।

६ मनुष्य को घात मत कर।

७ पर स्त्री गमन मत कर और कुदृष्टि से किसी स्त्री का और मत ताक।

८ चोरी मत कर।

९ झूठी साक्षी मत दे।

१० दूसरे की किसी बात की लालच मत कर।

और इन सारी आज्ञाओं को मुक्तिदायक मसीह ने दो बात में समाप्त किया है अर्थात् कि, मनुष्य अपने ईश्वर परमेश्वर को मन बाचा काया से प्रेम करे और अपने परोसी से अर्थात् सारे मनुष्यों से अपने समान प्रीत रक्खें सारी व्यवस्था और भविष्यबाणी इन दो बातों से प्रयोजन रखती हैं यह ईश्वर के योग्य का बचन है परंतु पाप का जन्म पाने और स्वभाव बिगड़ने से मनुष्य की योनि में आज लों किसी देश में किसी मनुष्य ने

ईश्वर की आज्ञा को पूरा पालन न किया परंतु उन्हें उ-
लघंन करने के कारण मनुष्य इस लोक में और परलोक
में स्रापित हैं क्योंकि बचन कहता है कि वुह जन स्रा-
पित है जो ईश्वर के संपूर्ण बचन को पालन नहीं करता
इस कारण सारे संसार के मनुष्य पापमय होके जगत में
नाना दुःख और रोग और पीड़ा में पड़े हैं और नरक के
अनन्त कष्ट के खटके में हैं इसी लिये मनुष्य अपनी
करणी से मुक्ति नहीं पासके परंतु ईश्वर की आज्ञा को
बूझने से मनुष्य को केवल अपना छिपा हुआ पाप बूझ
पड़ता है और बचन में भी लिखा है कि व्यवस्था मसीह
पास पहुंचाने को हमारा गुरु है परंतु उसी हमारी
मुक्ति नहीं हो सक्ती इस लिये मनुष्य को उचित है कि
करनी के द्वारा से मुक्ति न ढूंढे परंतु मुक्ति के लिये जो
मार्ग ईश्वर ने ठहराया हैं उसी को मन बाचा काया से
ग्रहण करे जिसका बर्णन अब करते हैं।

ON SALVATION.

७ सातवीं कथा।

मुक्ति के बिषय में।

बचन में लिखा है कि शैतान के बहकाने से मनुष्य
की पहिली जोड़ी ईश्वर की आज्ञा उलंघन करके पापी

ऊई, इस लिये उनके सारे बंश पाप में उत्पन्न होते हैं क्योंकि जैसा पेड़ तैसी डाली, जैसा सोता तैसी धारा जैसा सांप तैसा बच्चा, जैसा माता पिता का स्वभाव तैसा बालक का भी होता है इसी कारण सारे जगत में पाप फैल गया और पाप के मारे जगत की उत्पत्ति से सोलह सै छप्पन बरस पीछे परमेश्वर ने सारे जगत को जल से डुबा दिया और केवल एकही घराने को एक बड़ी नौका में बचाया और अब उन्हों के बंश सारे जगत में फैले हैं और सब के सब अपने तईं पापमय दिखावते हैं इस लिये परमेश्वर भी मनुष्य के बिषय में कहता है कि "मनुष्य के अन्तःकरण की हर एक चिंता और हर एक भावना नित्य केवल बुरी है" और परमेश्वर के बचन में लिखा भी है कि स्वभाव से, "एक भी धर्मी नहीं कोई बुझवैया नहीं कोई ईश्वर का खोजी नहीं सब के सब भटकी ऊई भेड़ की नाईं हैं सब के सब निकम्मे हैं कोई सुकर्मी नहीं एकभी नहीं उनके गले खुले ऊए समाधि हैं उन्हों ने अपनी जीभ से छल किया है, उनके होंठों में सांपों का बिष है, उनके मुंह स्राप और कड़वाहट से भरे हैं, लोहू बहाने को उनके पांव चालाक हैं दलना मसलना उनके पथों में है और उन्हों ने चैन का मार्ग नहीं पहिचाना उनकी आंखों के आगे ईश्वर की डर नहीं ईश्वर इस लिये यह बात कहता है जिसतें सारे

संसार का मुंह बन्द होजाय और सब के सब अपने को ईश्वर के आगे दोषी समझें सो करणी के द्वारा से कोई मनुष्य ईश्वर के आगे धर्मी नहीं होसक्ता क्योंकि ईश्वर की आज्ञा को मन बाचा काया से मनुष्य के बंश में किसि ने कबी पूरा न किया इस कारण सब के सब पातकी हैं और मुक्ति के बिषय में अशक्त और दुर्बल हैं और यद्यपि मनुष्यों ने आप को पाप से और नरक से उभाड़ने के लिये अपनी अपनी बुद्धि से नाना भांति और नाना मार्ग रोपा है इसी कारण तीर्थ, ब्रत, दान पुन्य, जोग, जप तप हां मनुष्यों ने मुक्ति के कारण अगणित बातें ठहराई हैं परंतु मुक्ति के बिषय में ये सब की सब बृथा हैं उनमें से एक बात भी काम न आवेगी परंतु उनसे मुक्ति ढूंढने में अधिक पाप बढ़ा चला जाता है।

और लिखा भी है कि।

जप तप तीरथ जोग समाधि।
कलिमति बिकल न कछु निरुपाधि॥
करत सुक्रित नहीं पाप सिराहीं।
किन्तु छिनहिं छिन बाढ़त जाहीं॥

और परमेश्वर कहता है कि वुह स्रापित जन है जो सारी आज्ञा के बचन को पालन नहीं करता इस्से निश्चय होता है कि यदि ईश्वर आप मनुष्य के उभाड़ने को

चिंता न करता तो सब के सब नरक में पड़ते परंतु दया सागर मुक्ति दायक परमेश्वर ने जगत पर ऐसा प्रेम किया है कि उसने मनुष्य के निस्तार के लिये अपने एकलौते प्रिय पुत्र ईसा मसीह को जगत में भेजा जिसतें पापी लोग अपने पाप में नाश न होवें परंतु अनन्त जीवन पावें इसी कारण उस कृपा निधान मुक्ति दायक ने कन्या के गर्भ में अवतार लिया और मनुष्यों के पाप का भार अपने ऊपर उठाया और पापियों में गिनागया और इस बात का समाचार जगत के आरंभ से अर्थात् जिस समय से पाप पैठा उसी समय में मनुष्य को दिया गया और मंगल समाचार में लिखा भी है कि प्रभु ईसा मसीह के नाम को छोड़ कोई दूसरा नाम और दूसरा मार्ग ईश्वर की ओर से नहीं दिया गया जिस्से मनुष्य उद्धार पाता और प्रभु आप कहता है कि मुझे छोड़ के कोई पिता पास जा नहीं सक्ता और जब किसी ने आके प्रभु से मुक्ति का भेद पूछा तब प्रभु ने कहा कि जिसे पिता ने भेजा है उस पर विश्वास लाना यही ईश्वर का कार्य्य है इसी लिये फेर कहता है कि मैं पापियों से पश्चात्ताप कराने को आया हों और अपने प्राण को बहुतों की मुक्ति के लिये प्रायश्चित में देने को आया हों इसी कारण प्रभु कहता है कि "हे पाप के बोझ से दबे और थके हुए प्राणियों मेरे पास आओ

और मैं तुम्हें चैन देउंगा, और मुझसे सीखो क्योंकि मैं कोमल और दीन हों और तुम लोग अपने मन में विश्राम पाओगे, इस लिये ईश्वर के पुत्र ईसा मसीह ने मनुष्य का बिचवई होके जगत में अवतार लिया और सभों के पाप का भागी होके अपने प्राण को प्रायश्चित्त में देके मारा गया और ईश्वर को सारी आज्ञाओं को मन, बाचा, काया से, जन्म भर पालन किया इसी रीति से उसने परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा करके उसकी महिमा प्रगट किई और क्षमा के द्वार को पापियों के लिये खोल दिया और प्रभ ईसा मसीह तीसरे दिन, अर्थात् इतवार को, जी उठा और अपने शिष्यों को आज्ञा किई कि तुम लोग सारे जगत में जाओ और हर एक जन को मुक्ति पाने का समाचार सुनाओ जो जो सुन के बिश्वास लावेगा और शिष्य होके स्नान पावेगा सो नरक से बच के अनन्त जीवन को प्राप्त करेगा परंतु जो बिश्वास न लावेगा सो स्रापित होगा सो हे प्रिय लोगो हमारी बिनती सुनो, हां अपने जन्म दाता और मुक्ति दायक की बिनती को हमारे द्वारा से सुनो और परमेश्वर से मिलाप करलेओ क्योंकि परमेश्वर मसीह में होके जगत को अपने से मेल करवाता है और बिश्वासियों की ओर पाप नहीं गिनता परंतु मुक्ति पदार्थ का भेद हमें सौंपा है कि तुम लोगों को सुनावें, सो।

इस लिये ।

सबतें बिनय करें। कर जेारी ।
मानझ सत्य बचन यह मेारी ॥
बंधु प्रतीति मसीह पर लाओ ।
जेहीतें मुक्ति पदारथ पाओ ॥
सकल नरक पीड़ा से बचिहेा ।
सदा स्वर्ग में हर्षित बसि हेा ॥

ON REGENERATION.

८ आठवीं कथा ।

नये जन्म के विषय में ।

पापी के बंश हेाके सब के सब पाप में जन्मते हैं इसी कारण सब के सब पाप स्वभाव रखते हैं और पाप कर्म्म में लवलीन रहते हैं, इस लिये श्री मुख बचन में लिखा है कि कुबिचार और हत्या, और परस्त्री गमन, व्यभिचार, चेारी झूठी साची ईश्वर की अपनिन्दा मन से निकलते हैं, और फेर लिखा है कि शरीर के ये कर्म्म प्रगट हैं परस्त्री गमन, व्यभिचार, अपवित्रता, कामुकता, मूर्त्ति पूजा, टेाना, बैर, झगड़ा, हिसका, क्रोध, बिवाद, दंगा, उपद्रव, डाह, हत्या, मतवालपन, धूम धाम, और ऐसी ऐसी जेा हैं सेा शरीर की स्वभाविक चाल हैं और कोई शरीरिक मनुष्य ऐसी चालें। के। छेाड़ने नहीं चाहता

है और इसी कारण से परमेश्वर की सारी पवित्र आज्ञा भारी और कठिन जानी जाती हैं और उन्हें पालन करने को पाप स्वभाव के कारण से मन नहीं उभड़ता और यदि भी मनुष्य आज्ञा पालने को सिद्ध होवे तो नरक की डर के मारे अथवा सुख पाने के लोभ के मारे उभड़ता है परंतु ईश्वर के प्रेम से अथवा मन की आनन्दता से नहीं इस लिये जबताईं मनुष्य पाप स्वभाव में रहता है तबताईं मनुष्य ईश्वर को किसी भांति से प्रसन्न नहीं करसक्ता इसी कारण जग तारक कहता है कि जबताईं मनुष्य जीते जी नया जन्म न पावे तबताईं वुह ईश्वर के राज्य में जा नहीं सक्ता क्योंकि यदि पाप का स्वभाव लेके मनुष्य बैकुंठ वासी हो सके तो बैकुंठ उसके लेखे नरक के तुल्य होता क्योंकि उसका स्वभाव ईश्वर के विरुद्ध है, परंतु यह नया जन्म जो है सो जगत में बारंबार जन्म लेना नहीं है परंतु नया जन्म का देना ईश्वर का कार्य्य है और धर्म्मात्मा के द्वारा से प्राप्त होता है और परमेश्वर के बचन पढ़ने सुने से वही हृदय में प्रवेश करता है और मन को प्रकाश करता है तब बचन सामर्थ्य के साथ कांटा सा चूभता है और मनुष्य पाप से दुखी और लज्जित होता है और चाहि चाहि करने लगता है तब संसारिक बात से जी नहीं भरता और और कल नहीं मिलता तब धर्म्मात्मा मन को मुक्तिदायक

ईसा मसीह के शरण की ओर फेरता है और उसी से पापियों के मन का घाव चंगा होता है तब ईश्वर के लेपालक पुत्रों में गिना जाता है और धर्मात्मा हृदय में बास करता है और ईश्वर का प्रेम मन में उमड़ता है तब ईश्वर की आज्ञा पर आनन्द से चलने लगता है क्योंकि पुरानी बातें जाती रहीं और नये जन्म के साथ सारी चालें नई हुई हैं, और आत्मिक स्वभाव की चालें ये हैं।

ईश्वर का और मनुष्य का प्रेम रखना और आनन्द, और कुशल, और सहना, और कोमलता, और भलाई, और बिश्वास, और नम्रता, और मध्यम होना, ईश्वर के बचन में और प्रार्थना में लवलीन रहना, और सब की भलाई चाहनी, किसी से बैर न रखना, सब का कुशल और मुक्ति ढूंढना, और सब के लिये प्रार्थना करनी, और जो कुछ करे सो ईश्वर की महिमा और बड़ाई के निमित्त करे जिसतें ईश्वर का धर्म और सच्चा मत सारे संसार में फैले और सब के सब नया जन्म पा के उसी बात के भागी होवें, इसी को नया जन्म कहते हैं और हमें तुम्हें, हे प्रिय, जीते जी इसे प्राप्त करना है, नहीं तो ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होसकेंगे सो प्रभु ईसा ने बचन दिया है कि जो हम लोग उसके बिश्वास से धर्मात्मा का अनुग्रह मांगेंगे तो अवश्य अवश्य उसे पावेंगे धन्य है परमेश्वर।

ON THE CHRISTIAN CHARACTER.

९ नवीं कथा।

प्रभु के भक्तों की चाल के बिषय में।

जब मनुष्य अपने पाप से पश्चात्ताप करके मुक्ति दायक ईसा मसीह पर बिश्वास लाता है, तब वुह धर्म मार्ग पर चलने को सिद्ध होता है।

यदि प्रभु का भक्त राजा होवे, तो वुह महाराज ईश्वर के बश में होके यही समझ के राज्य करेगा कि ईश्वर ने हमें इस लिये राज्य दिया जिसतें हम ईश्वर की महिमा और उसका धर्म राज्य अपनी प्रजा में फैलावें, और अपनी सामर्थ्य भर देश में पाप को बढ़ने न देवें परंतु वुह न्याय और धर्म से अपनी प्रजा की रक्षा करेगा और ईश्वर की भक्ति में लोगों के लिये आप एक दृष्टान्त होगा—यदि प्रजा लोग प्रभु के भक्त होवें तो प मेश्वर के लिये राजा के बश में होंगे और राजा को महातम और प्रतिष्ठा और कर देंगे।

यदि प्रभु का भक्त न्यायी होवे, तो निष्पक्ष होके न्याय करेगा, कुछ राजा का अथवा प्रजा का, धनी का अथवा कंगाल का, बड़े का अथवा छोटे का खैंच न करेगा, परंतु अपने को प्रभु का सेवक समझ के खरा बिचार करेगा। यह जान के कि मुझे प्रभु को लेखा देना है।

यदि प्रभु का भक्त स्वामी होवे, तो अपने स्वर्गीय स्वामी को चेत करके चौकसी से सेवा लेगा और सेवक की बनी दिया करेगा और सेवक के हर लोक परलोक का भला चाहेगा और सामर्थ्य भर भला करेगा उन्हें मार पीट और धमकी न दिया करेगा।

यदि प्रभु का भक्त सेवक होवे, तो प्रभु के लिये अपने स्वामी को प्रतिष्ठा देगा और उसकी आज्ञा पालन करेगा उसके आगे पीछे प्रभु के लिये समान सेवा करेगा और अपने स्वामी से न कुड़कुड़ावेगा उत्तर प्रति उत्तर न देगा, परंतु प्रभु के सेवक के समान दीनताई और परिश्रम और धर्म के साथ स्वामी की आज्ञा बजा लावेगा।

यदि प्रभु का भक्त माता अथवा पिता होवे तो प्रभु की और परलोक की ओर ताक के बालक को प्रतिपालन करेगा और परमेश्वर की डर और प्रेम में और उसके मार्ग में बालक को सिखावेगा और अपने जानते भर बालक को कुमार्ग में जाने न देगा, पाप करने न देगा, गाली देने न देगा, झूठ बोलने और जूआ खेलने न देगा, परंतु मारेगा पीटेगा, धमकी देगा और उन्हें जानते भर धर्ममार्ग में चलावेगा।

यदि प्रभु का भक्त लड़के बाले होवे, तो माता पिता का सन्मान करेगा, उनकी बात मानेगा, उनकी सेवा करेगा और दुख सुख में उनके काम आवेगा, किसी बात

में उनकी निन्दा न करेगा परंतु परमेश्वर के आशीष के भाग का खोजी होके उनके बश में अपने जीवन को बढ़ावेगा।

यदि प्रभु का भक्त उपदेशक होवे, तो ईश्वर के ज्ञान और बचन में निपुण होके समय और असमय में लोगों को उपदेश किया करेगा, घर घर प्रभु का उपदेश करेगा, पाप से पश्चात्ताप का बचन और मुक्तिदायक पर बिश्वास लाने का संदेश लोगों को देगा, प्रभु का सेवक होके प्रभु से और उसके मंगल समाचार से लाज न करेगा, लोगों के धन और संपत्ति को न चाहेगा, परंतु उनके प्राण की मुक्ति का खोजी होगा जिसतें सुनवैयों को निष्पाप और निष्कलंक के समान मुक्तिदायक के आगे पहुंचावे, और आनन्द से अपना लेखा देवे, उपदेश में न अपना न औरों का परंतु ईश्वर का मन रक्खेगा और श्रीमुख बचन से लोगों को सिखावेगा, और स्वारथी गुरुओं की नाईं कुछ मनमता न फैलावेगा परंतु ईश्वर की महिमा और लोगों की मुक्ति ढूंढ़ेगा।

यदि ईश्वर का भक्त श्रोता होवे, तो बचन का प्रतिपालक भी होगा, उपदेशक को ईश्वर का सेवक समझेगा और बचन को ईश्वरीय बचन जान के पढ़ेगा, सुनेगा, और मानेगा और बचन के प्रताप से जगत के अंधकार कर्म से बचा रहेगा और श्रोता प्रभु के सेवक के उपजी-

वन की चिंता करेगा और संसारिक वस्तु में उनकी सहाय करेगा।

ON PRAYER.

१० दसवीं कथा।
प्रार्थना के विषय में।

परमेश्वर ने जन्म दिया है और वही अन्न, जल, घर, द्वार, आदिक देता है, इसी लिये सब बातों में उसकी प्रार्थना नित्य किई चाहिये क्योंकि मुक्तिदायक कहता है कि, "हमारे मांगने से आगे हमारा स्वर्गीय पिता जानता है कि हमें क्या क्या चाहिये इसी लिये अपना अपना आवश्यक जानके और बूझ के प्रार्थना में वरण न किया चाहिये और अपने मुक्ति दायक ईसा मसीह के नाम से प्रार्थना किई चाहिये क्योंकि प्रभु ने कहा है कि, "जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे सो तुम्हें दिया जायगा," और प्रभु को छोड़ के मनुष्य किसी भलाई के योग्य नहीं परंतु अपने पापों के कारण हम लोगों ने केवल ईश्वर के कोप को कमा रक्खा है इसी लिये प्रार्थना करने की सहाय भी मांगी चाहिये, तब धर्मात्मा को पावेंगे, वुह हमारी दुर्बलता में अकथ आह आह से ईश्वर के मन के समान प्रार्थना में हमारी सहाय करेगा, तब

हम लोग प्रार्थना में ईश्वर का महातम बर्णन करेंगे, और अपने पापों को चेत कर करके उनसे पछता पछता के ईश्वर के आगे दीन होके मानलेंगे, और मुक्तिदाता की आशा से उनकी क्षमा चाहेंगे, और सारे स्वर्गीय और संसारिक आशीष मांगेंगे, और राजा के, और प्रधानों के, और घरानों के, और मित्रों के, और बैरियों के लिये, हां हिंदू मुसलमान और सारे जगत के लिये प्रति दिन बिनती किया करेंगे और सारे आशीषों के लिये ईश्वर का धन्य माना करेंगे, इन बातों में लवलीन रहने से प्रभु के भक्त जगत के, और पापात्मा के, और स्वारथ के बश से बच बचके ईश्वर के धर्म पर धर्मात्मा की सहाय से चलते हैं, और जिसतें मनुष्य नित्य प्रार्थना करे और उस में चूक न करे, प्रभु ममोह ने एक दृष्टांत कहा कि "किसी नगर में एक न्यायी था, जो ऐसा अधर्मी था कि न ईश्वर से डरता था न मनुष्य को कुछ समझता था और उसी नगर में एक बिधवा थी जो उस पास आके दोहाई देके कहने लगी कि मेरे बैरी से मेरा पलटा ले, और उसने कितनी अबेर लों न माना, परंतु पीछे से समझा कि यदि मैं इस का बिचार न करोंगा, तो यह मेरा सिर भुकावेगी, तब प्रभु ने कहा कि देखो उस अधर्मी न्यायी ने क्या कहा और क्या परमेश्वर अपने जन की प्रार्थना न सुनेगा जो रात दिन उस्से सहाय मां-

गता है" फेर प्रभु ने प्रार्थना के विषय में कहा है कि "यदि तुम लोग पापी होते हुए अपने बालकों को उनके मांगने से अच्छी वस्तु देते हो तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें धर्मात्मा कितना अधिक देगा जो उससे मांगते हैं" सो हे मित्रों आओ प्रभु पर आशा रख के नित्य प्रार्थना किया करें जिसतें आशीष पा पा के सारे बैरियों पर प्रबल होवें।

ON DEATH.

११ ग्यारहवीं कथा।
मृत्यु के विषय में।

प्रथम में जब परमेश्वर ने मनुष्य को सिरजा तब उसने उन्हें अमर बनाया और उन्हें चिता दिया था कि जो मेरी आज्ञा को टालोगे तो अमर न रहोगे परंतु मरजाओगे, उसके पीछे उन्हों ने पापात्मा की अर्थात् शैतान की बात को सच मान के ईश्वर की आज्ञा को टाल दिया इसी कारण से पापी होके उनकी अमरता जाती रही, तभी से मनुष्य मरने लगे, प्राण के देह से अलग होने को मृत्यु कहते हैं और मरने के पीछे मिट्टी का देह मिट्टी में मिल जाता है परंतु प्राण अमर है वुह ईश्वर के पास से आता है और देह छोड़ के ईश्वर कने अपनी चाल

का लेखा देने को फेर जाता है, कुछ आवागवन औ फेर फेर जन्मपाना नहीं होता और देह के नाश न होतेही प्राण अपने ठिकाने में पहुंच जाता है और जिसका पाप जीते जी नहीं मिटा और जो अपने पापों को चीन्ह के उन्से उदास न हुआ और मुक्तिदायक ईसा मसीह पर बिश्वास नहीं लाया और उसपर आशा नहीं रक्खी मरने पर उसका प्राण नरक की महा पीड़ा में डालाजाता है, ।

पर जिस जिस प्राणी ने जीते जी अपने पाप से पश्चात्ताप किया और अपने मुक्तिदाता ईसा मसीह पर बिश्वास लाके मुक्ति पाई सो सो प्राणी जगत से कूच करने से ईश्वर के राज्य में अनन्त और अकथ सुख प्राप्त करते हैं मरने के उपरान्त कुछ हो नहीं सक्ता जो जैसा मरा सो तैसा पाप में अथवा धर्म में सदा काल बना रहता है, इस लिये हे मित्रो, हे संगी पापीयो, ऐसे ज्ञान के लिये आओ ईश्वर का धन्य मानें ऐसी चितावनी के लिये आओ अपने जन्मदाता की स्तुति करें और चौकस होके अपने अपने पापों को चीन्हें और उनसे उदास होके पछतावें और अभी से अपने मुक्तिदायक ईसा मसीह पर बिश्वास लावें और उसकी आड़ में छिपें तब मरने के पीछे अनन्त जीवन को प्राप्त करेंगे क्योंकि केवल जीतेजी ईश्वर की सेवा और सुकर्म होसक्ता है परंतु मरने के पीछे

पाप मोचनपाने का और पश्चात्ताप करने का और प्रभु पर विश्वास लाने का और उस्से आशीष पाने का द्वार बन्द होजायगा इस लिये जो कुछ होसके सो आजही भर करलेवे क्योंकि कल का ठिकाना नहीं और कल प्रभु के हाथ है और फेर फेर जन्मपाने की आशा मत करो ये सब छल की बातें हैं क्योंकि ईश्वर के बचन में लिखा है कि मरने के पीछे न्याय होगा और जैसा मरोगे तैसा सदाकाल पड़े रहोगे और बचन कहता है कि मृत्यु का डंक पाप है और पाप का बल ईश्वर की आज्ञा है परंतु ईसा मसीह के विश्वास से हम दोनों पर प्रबल होते हैं।

ON THE JUDGEMENT.

१२ बारहवीं कथा।

न्याय के दिन के बिषय में।

संसार में हम लोग देखते हैं कि धर्मी और ईश्वर के भक्त भी दुखी होते हैं और दुष्ट लोग और कुकर्मी और झूठे और सत्य के बैरी और कुबाचक और जुआरी आदिक संसार में सुख और मगन से भी रहते हैं, ऐसी बातों को देख देख लोग अपने अपने पाप और सुख अभिलाष को छोड़ने नहीं चाहते हैं यह समझ के कि आगे कुछ नहीं है परंतु परमेश्वर के बचन में लिखा है

कि यह जगत अंत समय में नाश होजायगा तब गंगा यमुना और सारे तीर्थस्थान नष्ट हो जायेंगे सूर्य चंद्रमा ग्रह आदि जाते रहेंगे परंतु मनुष्य बना रहेगा और परमेश्वर सारे मनुष्यों का बिचार करेगा, वुह जगत का अन्त, और बिचार का दिन, और ईश्वर के महा बिचार का दिन, और उसके महा कोप का और धधकती आग का दिन कहावता है, ईश्वर के बैरियों के लिये वुह भयंकर और थर्थराने का दिन है, और लिखा है कि वुह दिन संसार पर अचानक ऐसा आ जायगा जैसा जल मय पापियों पर आया था लोग खाते थे पीते थे, ब्याह करते थे बियाह में दिये जाते थे उस समय लों कि प्रलय आके उन्हें परलोक में बहा लेगया, और जैसा कई नगरों पर पाप के मारे ईश्वर ने स्वर्ग से आग और गंधक बरसा के उन्हें भस्म किया, पापी लोग उस दिन लों खा पी आनन्द कर रहे थे उसी रीति से बिचार का दिन मनुष्यों पर आ पड़ेगा लोग अपने अपने आनन्द और सुख बिलास में पड़े हुए होंगे और परमेश्वर का शब्द होगा और आरंभ से लेके अन्त दिन के मृतक सब के सब जी उठेंग जल थल अपने अपने मृतक को उछाल फेंकेंगे और स्वर्ग और नरक में से सब के प्राण चले आवेंगे, और उस समय में पृथिवी पर जो जीते होंगे सो सब के सब पल मात्र में पलट जायेंगे और आत्मिक देह में हो हो आ-

काश में सब उठाये जायेंगे और स्वर्ग और पृथिवी आग से भस्म किये जायेंगे और स्वयं ईश्वर ईसा मसीह अगणित आत्मिक दूतों के संग ईश्वरीय विभव से मेंघों पर उतरेगा और सारी मनुष्य योनि उसके सिंहासन के आगे एकट्ठी किई जायगी, उस समय में परमेश्वर के दूत धर्मियों को अधर्मियों से अलग करेंगे और प्रभु के बिश्वासी और धर्मी उसको दहिनी ओर होंगे परंत पापी और बैरियों को उसकी बाईं ओर खड़ा करेंगे, तब सर्बदर्शी, अंतरजामी न्याय कर्त्ता ईसा मसीह सब के आगे धर्मियों से कहेगा कि, "हे मेरे पिता के अनुग्रहित पुत्रो मेरे पास चले आओ और उस राज्य के अधिकारी होओ जो जगत के आरंभ से तुम्हारे लिये सिद्ध किया गया क्योंकि मुझ पर बिश्वास रख के तुम लोगों ने धर्म का कर्म किया है, तब वे अनन्त काल के लिये ईश्वर के आनन्द में जायेंगे।

उसके उपरांत न्याय कर्त्ता सब दुष्टों से कहेगा कि, "अरे स्रापितो मेरे आगे से उस अनन्त आग में दूर हो जाओ जो शैतान और उसके आत्मिक दूतों के लिये सिद्ध किया गया था" तब वे दुष्ट आत्माओं के संग नरक की अनन्त पीड़ा में पड़ेंगे जहां अनन्त काल लों छटपटाते हुए दांत किड़मिड़ावेंगे।

सो हे मित्रो, सोचो, सोचो, इन बातों को मन में

रक्खो और आओ उस दिन के लिये चौकस हो रहें क्यों-कि हमें तुम्हें लेखा देना है और नरक की पीड़ा से अ-पना अपना प्राण बचाना है, और ईश्वर के राज्य में जा-ना है सो आओ अभी से ईश्वर के ज्ञान को पढ़ें और सुनें और मनन करें और अभी से उसके कोप से बचने की चिन्ता करें, अभी से अपने अपने पापों से पछतावें अभी से पाप से भागें अपने मुक्तिदायक की ओर भागें अभी से प्रभु ईसा मसीह का शरण लेवें अभी से उसकी आशा रक्खें अभी से तनमन उसे सौंपें और नया जन्म पाने के लिये, और धर्मात्मा की सहाय के लिये प्रार्थना करें तब हम लोग पाप से और नरक से बचके ईश्वर के प्रिय होंगे और मरने के पीछे ईश्वरके राज्य को प्राप्त करेंगे और न्याय के दिन में जब जगत भस्म होगा मुक्ति दायक ईसा मसीह के समीप आनन्दित होंगे।

ON HEAVEN.

१३ तेरहवीं कथा।
स्वर्ग के विषय में।

आकाश को स्वर्ग कहते हैं, और जिस में तारागण हैं सो भी स्वर्ग कहावता है, और इन से अधिक ईश्वर के

निवास को भी जहां पवित्र द्वतगण रहते है और जहां प्रभु के बिश्वासी भक्त मरके जाते हैं सो स्वर्गों का स्वर्ग कहावता है।

धर्म्म पुस्तक में लिखा है कि एथिवी परमेश्वर का चरण स्थान है और स्वर्ग उसका सिंहासन, और उसका विभव उसमें नित प्रगट है वुह पवित्र स्थान है उसमें किसी अबिश्वासी पापी का ठिकाना नहीं इस लोक में परमेश्वर के भक्त परमेश्वर को बिश्वास की दृष्टि से देखते हैं परंतु स्वर्ग लोक में उसे आमने सामने देखेंगे और वुह अनन्त सुख का स्थान है और दुख का लेश भी वहां नहीं है, वहां सब भक्त लोग परमेश्वर के समीप संपूर्ण आनन्द में रहते हैं और उसकी स्तुति नित्य किया करते हैं और परमेश्वर और मुक्तिदायक उनके मध्य मे सदा बने रहते हैं, वहां सूर्य्य का घाम और शीत का क्लेश और भूख पीयास का दुख कभी न होगा, वहां आत्मिक द्वतों के समान भक्त लोग रहते हैं और संसारिक व्यवहार वहां नहीं होता है परंतु ईश्वर के रूप में और उसके प्रेम और ज्ञान में परिपूर्णता से लवलीन रहते हैं और बचन कहता है कि वहां का सुख ऐसा है कि न आंखों ने देखा न कानों ने सुना न मनुष्यों की सरथ में आया जो परमेश्वर ने अपने निज जनों के लिये स्वर्ग लोक में सिद्ध कर रक्खा है, परंतु जो कुछ हम वहां के सुख जानते हैं

सो परमेश्वर ने अपने बचन में आप प्रगट किया है, जगत भर में प्रभु के भक्तों को दुख और क्लेश और बिपत और पाप के लिये रोना पीटना और जगत से सतायाजाना और शैतान से बहकाया जाना होता है परंतु स्वर्ग लोक में उन्हें केवल सुख हां परम सुख मिलता है ईश्वर आप उनके आंसुओं को पोंछता है और उन्हें शांति देता है और फेर मृत्यु और शोक और रोना पीटना और पीड़ा न होगी और वहां पर सूर्य और चंद्रमा का प्रयोजन नहीं क्योंकि ईश्वर और मुक्तिदायक ईसा मसीह वहां का ज्योति है और उन्हीं के मध्य में सदा काल रहता है और वहां कोई मंदिर भी नहीं है क्योंकि ईश्वर आपही वहां का मंदिर है, ईश्वर हम अधमों को अपने बेटे के द्वारा से उस स्थान का भागी करे सो हे मित्रो जो तुम पूछो कि मरने के पीछे हम उसगति को क्योंकर प्राप्त करें और उसके भागी क्योंकर होवें तो श्रीमुख बचन से उत्तर लेओ मुक्तिदायक ईसा मसीह आप कहता है, "हे पाप के बोझ के नीचे दबेहुए थके लोगो इधर मेरे पास आओ और मैं तुम्हें चैन देउंगा मुझे सीखो क्योंकि मैं दीन और नम्र हों और तुम अपने प्राण में बिश्राम पाओगे," और बचन में फेर लिखा है कि मरते मरते जब एक महा पापी प्रभु ईसा पर मुक्ति की आशा रख के यों बिनती किई कि हे प्रभु जब आप

अपने राज्य में जायें तो मुझे भी स्मरण कीजियो प्रभु ने उत्तर दिया कि आजही तू मेरे साथ बैकूंठ में अर्थात् स्वर्ग लोक में पहुंचेगा और वैसाही हुआ, इसी रीति से हम और तुम भी ईश्वर के राज्य में पहुंचेंगे क्योंकि प्रभु ईसा का विश्वास स्वर्ग लोक का द्वार है।

ON HELL.

१४ चौदहवीं कथा।
नरक के विषय में।

नरक अत्यंत पीड़ा का स्थान है और वह इस जगत के आगे से शैतान और सारे पापात्मा के लिये सिद्ध किया गया था परंतु जब से मनुष्य पाप में पड़ा तब से उसके दंड और पीड़ा में भागी हुआ इसी कारण से जो मनुष्य अपने पाप में मरते हैं उनका प्राण पीड़ा में डाला जाता है इसी लिये श्री मुख बचन में लिखा है कि जब एक अधर्मी धनमान मर गया तब उसका प्राण नरक की आंच में पड़ा और वहां कलपने और छटपटाने लगा और उसी नरक को कई एक बात से और नाना दृष्टांतों से बर्णन किया है अर्थात् अबूझ आग से दृष्टांत दिया है और फेर, "आग और गंधक की झील से" और

सर्वदा के विनाश से, और ईश्वर के आगे से खेदे जाने से, और सनातन अंधकार से, और रोने पीटने और दांत पीसने से और कष्ट के मारे छटपटाने से और परमेश्वर के महा कोप में पड़ने से, और पियास के मारे एक बूंद पानी बिना छटपटाने से, और निरास होके पीड़ा में रहने से दृष्टांत देता है, और लिखा भी है कि "अधर्मी, ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे, छल न खाओ क्योंकि व्यभिचारी और मूर्त्ति पूजक और परस्त्री गामी, और जुमेहरे और पुरुषगामी और चोर और लालची, और मद्यप और निंदक और निचोरी ईश्वर के राज्य के अधिकारी न होंगे" और फेर लिखा है कि "भयमान और प्रभु के अविश्वासी और घिनौना और हत्यारा और व्यभिचारी और टोनहा और मूर्त्तिपूजक और सारे झूठे उसी आग और गंधक की झील में अपना भाग पावेंगे" उसी नरक को दूसरी मृत्यु भी कहते हैं परंतु मनुष्य का प्राण कभी नहीं मरता और वहां की आग कभी नहीं बुझती और प्रभु ने भी कहा है कि यदि तुम्हारा हाथ अथवा पांव अथवा आंख तुम्हारे पाप के कारण होवें तो उसे निकाल फेंको क्योंकि एक आंख अथवा एक हाथ पांव रखते हुए स्वर्ग में जाना अतिभला है कि तुम्हारा सर्व देह नरक की अबुझ आग में डाला जाय, और नरक में पड़ने से कभी न निकलेगा क्योंकि

जैसा उनके पाप का अंत नहीं है तैसा ईश्वर के कोप का और उनकी पीड़ा का अंत नहीं है इस लिये प्रभु कहता है कि मनुष्य को क्या लाभ होगा यदि वुह सारे जगत को कमावे और अपने प्राण को नरक में गंवावे, बचन फेर कहता है कि, "यही मुक्ति पाने का दिन है यही बचने की घड़ी है," सो हे मित्रो नरक के अवैया कोप से भागो हां अभी से भागो और अपने पापों से पछता पछता के मुक्तिदायक ईसा मसीह का शरण लेओ क्योंकि वही तुम्हारे पाप के कारण प्रायश्चित्त ऊआ और मृत्यु और नरक की कुंजी उसी के हाथ है सो जैसा कि तुम्हारा जीवन और मरण उसी के हाथ है तैसा चेतो चेतो और उसी की ओर मन फेरो और उसी पर आशा रक्खो और वही तुम्हें ग्रहण करेगा।

तव दुख पाप नरक से बचि हो।
सदा स्वर्ग में हर्षित बसि हो॥

CONCLUSION.

१५ समाप्त कथा।

अब हे मित्रो प्रभु की दया से यह परम ज्ञान तुम्हारे पास पहुंचा है जिसमें ईश्वर के निज मत का संक्षेप लि-

खा है यदि परमेश्वर इस ज्ञान को प्रगट न किये होता तो सारा संसार अपने अपने ज्ञान और विद्या से इसका भेद कभी न पा सक्ता इस लिये जहां जहां यह ज्ञान नहीं है तहां तहां लोगों ने स्वयं ईश्वर को अंधे के हाथी के समान समझ रक्खा है, जिसके मन में जो आया सो लिखा और सब के सब सच्चे ईश्वर से भटके हुए हैं इसी लिये दोनों लोक में ऐसों पर ईश्वर का स्राप है परंतु इस स्राप को मिटाने के लिये ईश्वर के पुत्र ईसा मसीह ने इस जगत में अवतार लिया और उसी की दया से तुम लोग यह परमज्ञान पाते हो इस लिये मेरी बिनती को मानो और अपने प्राण पर दया करके इसे ईश्वरीय ज्ञान समझ के पढ़ो और सुनो और मन में तौलो और ग्रहण करो क्योंकि अंत में यही काम आवेगा, इस में तुम ईश्वर का तत्व और उसके गुण का भेद पाओगे, और आत्मिक द्रुतों का और पापात्मा का भेद ईश्वर तुम पर खोलता है, और तुम्हें दिखता है कि धर्म मेरी ओर से है और पाप उस दुष्टात्मा की ओर से है, और सृष्टि का समाचार और मनुष्य के भ्रष्ट होने का संदेश पाते हो, और परमेश्वर की इस आज्ञा और उनके अभिप्राय इसमें देखते हो, और परमेश्वर ने जो मुक्ति मार्ग तुम्हारे कारण ठहराया है सो तुम्हारे आगे वर्णन किया गया है और जिस रीति से जीते जी नया जन्म

पासक्ते हो और प्रभु के भक्तों की चाल प्राप्त कर सक्ते हो और क्योंकर ईश्वर की प्रार्थना किई चाहिये सो सब इस में पाते हो, फेर मृत्यु की बात और न्याय के दिन का समाचार और स्वर्ग नरक का संदेश संक्षेप से तुम्हारे आगे खोला गया है और यह कुछ मनुष्यों के ज्ञान से नहीं परंतु श्री मुख बचन से निकला हुआ है, सो ऐसे ज्ञान को मत टालो परंतु उसे दुर्लभ समझ के ईश्वर का धन्य मानो और श्री मुख बचन को खोजो और ध्यान से पढ़ो और समझो और अपनी अपनी चाल को उसके समान सुधारो, ईश्वर को पहिचानो अपने को चीन्हो, अपने पाप को और अपनी दुर्बलता को समझो और अपने मुक्तिदाता ईसा मसीह पर बिश्वास लाओ और उसी का शरण लेओ और उसके द्वारा से स्वयं ईश्वर को पहिचानो क्योंकि इसी लिये उसने अपने पुत्र को जगत में भेजा और मसीह बिना कोई परमात्मा का ज्ञान और भेद नहीं पा सक्ता है, सो उसी को चीन्हो और उसी के ध्यान में रहो और उसी पर आशा करके नित्य प्रार्थना करो हृदय को प्रकाश करने के लिये प्रार्थना करो, पाप मोचन के लिये प्रार्थना करो, धर्मात्मा की सहाय पाने के लिये और नया जन्म पाने के लिये प्रार्थना करो और मरने के लिये और ईश्वर को लेखा देने के लिये तैस हो रहो जिसतें मरने के समय में

अपने मुक्तिदायक ईसा मसीह के बिश्वास और धर्म में पायेजाओ, तब मरना तुम्हारे लेखे अनन्त जीवन हो जायगा और जगत का छोड़ना कष्ट और दुख, रोना और पीटना, पाप और शैतान का छोड़ना होगा, और ईश्वर के राज्य को और उसके अनन्त सुख को प्राप्त करना होगा और अपने मुक्तिदायक ईसा मसीह के प्रताप से जय जय करते हुए इस मिट्टी के शरीर को छोड़ोगे और बैकुंठ बासी होओगे और न्याय के दिन में जब सब का लिखा लिया जायगा और जब कि ये देखो हुई सारी बस्तें दधकती आग से भस्म किई जायगी तब तुम लोग आनन्द से आकाश में उठाये जाओगे और अपने मुक्तिदाता न्याय कर्त्ता के सिंहासन के आगे आत्मिक देह में होके उठाये जाओगे और जब कि प्रभु के बैरी और मूर्त्ति पूजक और मनमता के ग्राहक अनन्त पीड़ा में दूर किये जायेंगे तब तुम लोग ये आनन्द की बातें प्रभु के मुख से सुनोगे कि "हे मेरे पिता के अनुग्रहित पुत्रो दूधर आओ और उस राज्य के अधिकारी होओ जो अनादि काल से तुम्हारे लिये सिद्ध किया गया था"

1st Allahabad Edition.] [5.000 Copies.

THE SUBSTANCE OF THE SCRIPTURES.

धर्मपुस्तक का सार।

दोहा।

ईश्वर है सब लोग यह जानत हैं जगमाहिं।
धर्मग्रंथ में लिखा भी या में अंतर नाहिं॥
यह भी बर्णन किया है जो नहीं मानत ताहि।
सो जन तो हैं बावरे या में संशय नाहि॥

चौपाई।

बऊतेरे जन पूछहिं ऐसा।
क्या है ईश्वर अरु है कैसा॥
निर्गुण है कि है गुणमान।
कहां बसत है कहो बखान॥
कौन रूप अरु कौन सुभाव।
ताको बर्णन कहि समुझाव॥
बर्णन करों सुनें चितलाय।
पूछो उन्हें सो देहिं बताय॥

ALLAHABAD PRESBYTERIAN MISSION PRESS.
1843.

निज चेतन को कहि समुझावें।
क्या है सो वे मोहि बतावें॥
निर्गुण है कि है गुणमान।
कौन रूप है कह बखान॥
यदि निज चेतन थाह न पावे।
तो अथाह के थाह कस आवे॥
पर जो धर्मग्रंथ ने भाई।
कहा कहें सो सकल बुझाई॥

दोहा।

बर्णन तत्व सुभाव का ईश्वर के यह जान।
और जो वाके गुण अमिट ताको सुनि चित ठान॥

चौपाई।

परब्रह्म का बर्णन जोई।
हिय में धरऊ कहें मैं सोई॥
रूप रेख पांच तत्वन के।
ईश परे है सदा उन्हन के॥
है चैतन्य रूप ते हीन।
महा चेतन को वैसा चीन॥
जो कछु उचित सो कहें बखान।
ईश्वर को परमात्मा जान॥

निज आत्मा सचाई से नित।
वा की सेवा करो जान हित॥
वुह असीम अनादि अनन्ता।
अरु है नित्य सदा भगवन्ता॥
सकल लोक है टलायमान।
अटल जो है सो ईश्वर जान॥
दुख सुख भोग सृष्टि में जानऊ।
ईश्वर को नित्यानन्द मानऊ॥
हैं त्रिलोक वा के आधीन।
केवल ईश्वर निर आधिन॥
सर्बदर्शी अरु सर्वव्यापी।
वुह अनन्त ज्ञानी भी आपी॥
यद्पि सामरथ है सबहो के।
तद्पि अमित बल नाहिं किसीके॥
किंतु सर्वसामर्थी ईश्वर।
अरु अनंत बल है परमेश्वर॥
वुह तो शुद्धता में है जैसा।
ज्योतिमान तेजस्वी तैसा॥
सच्चा अरु बिश्वासत वुह है।
और बचन में सदा अटल है॥
रहै अनीति बातें अलगानी।
नीति पुर्ण वुह कहों बखानी॥

जहां जहां देखऊ कृपा भलाई।
तहां तहां सो सब प्रभुतें आई॥
यद्यपि नम्रता वा में बसई।
तद्यपि महा तेजो मय अहई॥
अलख अखोज प्रभु को जानेा।
अद्वैत सत्य अरु जीवत मानेा॥
ईश्वर सर्ब लोक का स्वामी।
है घट घट का अंतर जामी॥
यद्यपि ईश तत्व अद्वैत है।
ईश्वरत्व में तद्यपि तीन है॥
धर्मग्रंथ में जिन के नामा।
बर्णन कीन्ह करेा सन्माना॥
नाम एक का पिता कहावे।
दूजा नाम पुत्र अस गावे॥
अथवा बचन जान निज हीय।
धर्मात्मा है नाम तृतीय॥
ये तीनेां हैं ईश्वर एक।
समुझ बूझ हिय लाय बिवेक॥

दोहा।

बर्णन ईस सुभाव का अरु गुण का करि भाख।
अब कछु वा की क्रिया का सुनि के चित धरि राख।

चैापाई ।

बेद शास्त्र बज्ज भांति पुराना।
ग्रंथ अनेक बज्ज ज्ञान बखाना॥
बुद्धि समान सब मिलि अनुमाना।
निज निज मति अनुसार बखाना॥
कोउ कोउ जग रचना नहिं मानहिं।
सृष्टिहि किंतु अनादि बखानहिं॥
चार बेद नहीं एक प्रकारा।
जिन में सृष्टि को बज्ज बिस्तारा॥
बज्जबिधि कहहिं सृष्टिकी रचना।
सह संदेह तिन्हन के बचना॥
करत बिचार खुलत अस भाई।
ईश्वर जोग्य उनज्जं न बताई॥
अब मैं बर्णन करों बखानो।
जेहि बिधि धर्मग्रंथ की बानी॥
आदि समय में ब्रह्म अपारा।
पृथी स्वर्ग को कीन्ह पसारा॥
सुनि प्रभु तुरतहि जोति बनाई।
अंधकार तें तेहि अलगाई॥
तब प्रकाश को दिन प्रभु कहेउ।
तम का नाम राति अस भएउ॥

संध्या प्रातकाल तब भएउ ।
एहि बिधि प्रथम दिवस होई गएउ ॥
दूजे दिन प्रभु पवन बनावा ।
करि दूई भाग नभहि बिलगावा ॥
तीजे दीन प्रभु आज्ञा दियेउ ।
जल एकत्र होई सिंधु कहायेउ ॥
शुष्क भूमि जलतें अलगानी ।
नाम तासु तब पृथी बखानी ॥
परब्रह्म की आज्ञा पाई ।
भांति भांति तिन्ह तृण उपजाई ॥
बात कहत प्रभु चौथे दिन में ।
दूई जोति रचि राखा नभ में ॥
दिवसाध्यच्च सूर्य करि राखा ।
चंद्र प्रधान राति को भाखा ॥
दिवस मास रितु बर्ष को ज्ञाना ।
होय जिन्हहितें करि परमाना ॥
पंचम दिन की सृष्टि एही भांति ।
कीट पतंग मच्छ बज्र जाती ॥
प्रभु आज्ञातें इनको भाई ।
जलने बिलगि बिलगि उपजाई ॥
छठवें दिन प्रभु भूमिहि कहेऊ ।
पशु अनेक बातें उपजाएऊ ॥

सृष्टि अंत में मानुष रचेऊ ।
जेहि प्रकारतें सो अब भयेऊ ॥
प्रभु पृथिवी की धूलिहि लीन्हा ।
पुतला मानुष का तब कीन्हा ॥
जीवन श्वास फूकेउ नथुनांतें ।
जीवत प्राण भयेउ सो तबतें ॥
सकल जगत प्रभुता तेहि दिएउ ।
पृथ्वी प्रधान ताहि को किएऊ ॥
पुनि तेहितें पसुली एक लीन्ही ।
उपकारिणी नारि रचि दीन्ही ॥
एहि बिधितें पति पत्नी भयेऊ ।
करि संबंध ईश अस कहेऊ ॥
अलग मातु पितु से नर रहई ।
पति पत्नी के संगही बसई ॥
कहेंउं बिचारि जगत की रचना ।
जेहि बिधि धर्मग्रंथ के बचना ॥
भये सकल जब पूरण कामा ।
सतवें दिवस किया बिश्रामा ॥
यहि कारण सब देश में भाई ।
सात दिवस व्यवहार सोहाई ॥

दोहा।

ईश क्रिया बर्णन कियों एथक एथक समुझाय।
अब मानुष के सृष्ट विधि कहों सुनऊ चित लाय॥

चौपाई।

पाप बिषय में बऊ बिधि ज्ञाना।
जग में भाषहिं करि परमाना॥
बऊ हिंद्र भाषहिं धरि धीरा।
पाप पुन्य मिलि बना शरीरा॥
आगे का वृतांत न जानें।
अरु बऊतेरे ऐसो मानें॥
ईश्वर की लीला है भाई।
अरु माया वृत कहहिं बुझाई॥
कृष्ण कहो अर्जुन से जोई।
भागवद्गीता मं हैं सोई॥
पाप पुन्य जग में नहिं मानो।
जो कछु लखऊ सो मोतें जानो॥
है जग मेा में महीं बनाओं।
नट पुतली सम सबै न चाओं॥
रामायण ऊ में रचि राखा।
बचन सदाशिव गिरिजहि भाखा॥

उमादार योषित की नाईं ।
सभै नचावत राम गोसाईं ॥
नट मर्कट इव सभै नचावत ।
राम खगेश बेद अस गावत ॥
ईश्वर योग्य बचन यह नाहीं ।
करि बिचार देखो मन माहीं ॥
बूझे सूझि परत अस भाई ।
जाके मन जस भावना आई ॥
सो तैसा वर्णन करि गावा ।
ठीक भेद इनहूं न बतावा ॥
मुसलमान यद्यपि अस जानें ।
जग में अघ शैतान से मानें ॥
पर मानुष में पाप स्वभावा ।
जानहिं नहीं कहां तें आवा ॥
या कारण तें वे सब कहहीं ।
बालक निष्पापी उपजाहीं ॥
नहीं ठीक यह ज्ञान बिचारा ।
होत सत्य यदि यही प्रकारा ॥
तो बालक जग में नहीं मरते ।
होय सयान पाप नहीं करते ॥
उत्तम वृक्ष अधम फलहीना ।
रहै अधन उत्तम फलहीना ॥

यदि उनमें कछू पाप न होते।
तो वे पाप कर्म नहीं करते॥
जातें अस बिचार मन आवा।
भेद सकल उनछं नहिं पावा॥

दोहा।

निज निज मति अनुसार सब कथहिं जगत में ज्ञान।
अब मैं धर्मग्रंथ तें कहों बचन परमान॥

चौपाई।

अब मैं कहों सुनऊ परमाना।
धर्मग्रंथ के बचन समाना॥
जब ईश्वर मानुष को रचेऊ।
निज सम शुद्ध अरु पावन कियेऊ॥
जीव जंतु बश में करि माना।
सकल जगत पर कीन्ह प्रधाना॥
तहां सुन्दर एक बाग लगावा।
आदि पुरुष को वहां बसावा॥
अरु नारी को प्रभु रचि दीन्हा।
उन्हें यही आज्ञा तब कीन्हा॥
सकल वृक्ष का फल तुम खाएऊ।
एक बिटप से कबहूं न खाएऊ॥

जो यह बीरुध का फल खैहो।
कहों तुम्हैं निश्चय मरि जैहो॥
पर शैतान तहां तब आवा।
सर्प रूप धरि के बहकावा॥
अरु नारी से कहेसि बनाई।
अंतर कपट बचन मृदुताई॥
जो यह बीरुधु का फल खैंहो।
प्रणकरि कहों कबहुं नहीं मरिहो॥
किन्तु ज्ञान में भले बुरे के।
नेत्र उघरि जैहैं तब नीके॥
होइहो नश्चय ईश समाना।
सुनि त्रिय तासु बचन को माना॥
ईश बचन को मिथ्या जाना।
बैरी बचन सत्य करि माना॥
आप खाय निज पति को दियेउ।
एहि बिधि पाप जगत में आएउ॥
बश में होय बैरी के दोऊ।
आदि पुरुष अरु नारी सोऊ॥
जिबहा स्वाद सुखद करि जाना।
अरु महिमा लगि ईश समाना॥
अपने को अरु निज बंशन को।
नष्ट कीन्ह अरु मृतक सभन को॥

आदि पुरुष की ओर से भाई।
पाप जगत में है दुखदाई॥
पाप के कारण मृत्यु निवासा।
जेहीतें होय सभन के नासा॥
वृद्ध तरुण बालक नर नारी।
अघमय सकल नरक अधिकारी॥

दोहा।

जग में पाप प्रवेश बिधि मानुष भ्रष्ट बिधान।
कहि समुझाएउं देइ के धर्मग्रंथ परमान॥
अब मानुष निस्तार बिधि कहों सुनो चितलाय।
जेहि माने तें नरक भय शोक मोह मिटजाय॥

चौपाई।

जग में मुक्ति बिषय बहु ज्ञाना।
निज निज मति अनुसार बखाना॥
साचे बचन जों उनकी कोई।
ईश योग्य एकहु नहिं होई॥
रोपिन्हि सब मिलि जग में भाई।
दुई प्रकार की बात बनाई॥
कोउ कहें करनी से होई।
नरक बचाओ मंद मति सोई॥

एहि कारण पूजा तप ध्याना ।
करहिं दान तीरथ ब्रत नाना ॥
दूजे कहिहिं नहीं कछु पापा ।
और न पुन्य ईश सब आपा ॥
हैं मिथ्या देानेां यह ज्ञाना ।
सत्य भेद इनहूं नहिं जाना ॥
सब जानहिं कि किये सुकर्मा ।
नहीं छुटि हैं निंदित कर्मा ॥
जप तप तीरथ येाग समाधि ।
कलि मति विकल नकछु निरुपाधि ॥
करतहू सुब्रत न पाप सिराहीं ।
किंतु छिनहीं छिन बाढ़त जाहीं ॥
और इश बाणी अस कहई ।
जो ईश्वर आज्ञा नहिं गहई ॥
ईश्वर स्राप तासु सिर ऊपर ।
झूमि रहा है यह निश्चय कर ॥
एहि कारण करनी से भारी ।
नरक निवास येाग्य नर नारी ॥
ऐसेा यदि कोउ कहे जगमाहीं ।
हम ते पापहि मानत नाहीं ॥
तेा क्या उनके पाप नसाई ।
हेानहार ऐसेा नहिं भाई ॥

अब मैं धर्म ग्रंथ की बानी।
बरनों मुक्ति विषय रससानी॥
मुक्ति पदारथ जो तुम जानऊ।
सो ईश्वर की ओर से मानऊ॥
मानुष भ्रष्ट भयो जेहि काला।
प्रगट भये तब दीनदयाला॥
मुक्ति को मारग ताहि बतावा।
औ बचन यह ईश जनावा॥
जगतारक त्रिय से अवतरि है।
सिर शैतान को मंजन करि है॥
या को तत्व अर्थ सुनि लेऊ।
कहों पुकारि न कछु संदेऊ॥
प्रभु निज सुत जगमाहिं पठइ है।
नारि गर्भ तें जन्म जो लेइ है॥
वुह मानुष के पाप मिटै है।
कर बैरी से वही छुडै है॥

दोहा।

जन्मलेन उपदेश अरु जो करनी प्रभु केरि।
अब तिन को वर्णन करों धर्मग्रंथ मं हेरि॥
औ मरण पुनि जीउठन अरु निज राज्य में जान।
क्रम से सब वर्णन करों सुनऊ बंधु दै कान॥

चौपाई।

जन्मकाल जब आय तुलाना।
तब स्वयमीश्वर कृपानिधाना॥
निज सुत को जगमाहिं पठावा।
ईसा मसी नाम तिन पावा॥
आय जगत में सब पापिन को।
करे निस्तार नरक भागिन को॥
कन्या गर्भ माहिं बसि जोई।
पाप रहित उपजा प्रभु सोई॥
बाल अवस्था से तेहि ऊपर।
लागे होन विरोध महावर॥
और सयान भयो जब ईसा।
मंगल समाचार उपदेसा॥
लगा करण सो नगर नगर में।
ग्राम ग्राम में और डगर में॥
और कहन लागा सबहीतें।
जानऊ सत्य बचन यह जीतें॥
जौंलगि नूतन जन्म न होई।
ईश्वर राज्य योग्य नहीं कोई॥
और बात यह दीन्ह जनाई।
देखऊ ईश्वर कृपा भलाई॥

ऐसो प्रेम जगत पर कीन्हा।
निज सुत एकलौते को दीन्हा॥
जेहि तें पापी मानुष जोई।
निज अघ कारण नाश न होई॥
पर बिस्वास जो तापर लावे।
निश्चय करि उद्धार सो पावे॥
जब लों रहेउ जगत में स्वामी।
कियेउ सुकर्म सो अंतरजामी॥
बड़ो बड़ो आश्चर्य दिखावा।
बहुतेरन बांछित फल पावा॥
दृष्टि दान दीन्हेंव अंधन को।
पदगामी कीन्हेंव पंगुन को॥
और हस्त टुंडन को दीन्हा।
अर्द्धांगिन को चंगा कीन्हा॥
सुस्थिर कीन्ह बिबिध रोगिन को।
और शुद्ध कीन्हेंव कोढ़िन को॥
जीवदान मृतकन को दीन्हा।
तदपि न बहुतेरे तेहि चीन्हा॥
पांच सात रोटिन से स्वामी।
बहु सहस्र को अंतरजामी॥
उदर पूर्ण करि सबै जेवांवा।
परमानन्द सकल जन पावा॥

और गमन सागर पर कीन्हा।
आंधिहि तुरित रोकि सो दीन्हा॥

दोहा।

ऐसो बड़ अचरज कियो कहां लगि कहेां बखान।
संक्षेपहिं वर्णन कियेां सुनऊ बंधु दैकान॥

चौपाई।

यद्यपि करत रहेव एहि भांती।
तदपि न चैन मिलेव दिन राती॥
जीवन भर निर्धन सेा रहेऊ।
निज निवास खगि भवन न कियेऊ॥
हां वुह आपुहि कहत पुकारी।
बचन सत्य जानऊ नर नारी॥
बन्य पशुन के मांद घनेरे।
नभ पंछिन के हेतु बसेरे॥
मेरे कारण जग के माहीं।
सिर धरने को स्थानऊ नाहीं॥
दुष्टन न नित वाहि सतावा।
अरु दुर्गचन अनेक सुनावा॥
तदपि उन्हें न कहेव कछु खामी।
महा पुरुष प्रभु अंतरजामी॥

अंत समय दुष्टन अस कीन्हा।
चोर बधिक समतेहि धरि लीन्हा॥
टांगेन्हि काष्ठ ऊपर तेहि काला।
अंधकार भए रवि तत्काला॥
टांगा पहर दुईलों तहां रहेऊ।
ता पीछे निज प्राणहिं दिएऊ॥
कंपि भूमि भूधर बऊतेरे।
उठे समाधितें संत घनेरे॥
प्रभु कृपाल तीजे दिन माहीं।
जोय उठा कछु संशय नाहीं॥
शिष्यन को निज दरस दिखावा।
दिन चालिस उन मांहिं बितावा॥
और कहा आज्ञा मम मानऊ।
सकल जगत में जाय सुनावऊ॥
मंगल समाचार सब जन को।
जेहितें कुशल होय अब उनको॥
सुनि मो पर बिश्वास जो लैहैं।
सो अनंत जीवन को पैहैं॥
जो बिश्वास न लैहैं भाई।
सो अनंत पीड़ा में जाई॥
जौलगि अंत न होइ है जग के।
रहिहों संग सदा तुम सब के॥

प्रणकरि कहा स्वर्ग जब जैहों।
धर्मात्मा तुम पास पठैहों॥
सकल धर्म सो तुम्हें जनइ है।
हिय में बसि सहाय नित करि है॥
धर्मात्मा बसि है हिय जाके।
अघतें दूषित करि है ताके॥
सत्य धर्म अरु न्याय बिज्ञाना।
प्रगट करेगा सोई सयाना॥
मोही पर साक्षी सो देइ है।
सदा कुशल वाहि तें होई है॥
एहिबिधि दृढ़करि देइ असीसा।
गयो स्वर्ग पर जगत अधीसा॥
बैठेउ जाय राज्य निज माहीं।
कबहूं अंत जासु को नाहीं॥
इन बातन तें ऐसो खुलई।
ईश्वर पुत्र मसी प्रभु अहई॥
और जगत का स्वामी सोई।
अघतें मुक्ति जाहि तें होई॥
मानुष कारण प्रभु अस कियेऊ।
अपनो प्राण समर्पण कियेऊ॥
हम सब के अघ कारण जोई।
प्रायश्चित्त भयो प्रभु सोई॥

हमें उचित एहि कारण अहई।
धर्मग्रंथन्ह एहि बिधि कहई॥
निज भरिष्टता से हम लोगू।
लज्जित होय करें नित सोगू॥
अपने पापन से पछतावें।
मिथ्या आशा सकल उठावें॥
जो क्रिपाल प्रभु मुक्ति को दाता।
ईसा मसी जगत को त्राता॥
तावहिं तासु ऊपर बिश्वासा।
गहें वहीं प्रभु की हम आसा॥
जेहितें पाप हमारे भाई।
क्षमा कियेजावें दुखदाई॥
अरु ईश्वर सिंहासन आगे।
निष्पापी हम होंहि सभागे॥
अरु धर्मी जाने प्रभु सोई।
जेहितें मुक्ति हमारो होई॥
सबतें बिनय करों करजोरी।
मानऊ सत्य बचन यह मोरी॥
बंधु प्रतीति मसी पर लाओ।
जेहितें मुक्ति पदारथ पाओ॥
सकल नरक पीड़ा से बचिहो।
बदा स्वर्ग में हर्षित बसिहो॥